आँसू और मुस्कराहट

लेखक

खलील जिब्रान

अनुवादक

मुगनी अमरोहवी

प्रकाशक

नारायणदत्त सहगल एण्ड संज

दरीबा कलाँ, दिल्ली।

उस मज़दूर के नाम

जो

पसीने के ठंडे कतरों और आँसुओं

की गरम बूँदों से अत्याचारी

पूँजीपतियों के लिए

मुस्कराहटों का सामान

प्रस्तुत करता है।

●

अनुक्रमणिका

प्रकृति के राग

प्रस्तावना

मैं अपने दिल के गम लोगो की खुशियो से नही बदलता । मैं नही चाहता कि मेरे वह आँसू जो लिखते समय मेरी आँखो से लगातार बहते हैं, हँसी मे बदल जाये । मैं तो चाहता हूँ कि मेरा जीवन—आँसू और मुस्कराहट—मुस्कराहट और आँसू ही रहे ।

आँसू—जो मेरे दिल को प्रकाशित करदे—मुझे जीवन के भेद और उसकी सूक्ष्मताओ से परिचित करादे ।

मुस्कराहट—जो मुझे इसानो के निकट ले जाये और जिसमे खुदा की प्रशसा की तरफ सकेत हो ।

आँसू—जिनके द्वारा मुझे टूटे हुए दिलो से सहानुभूति हो ।

मुस्कराहट—जिससे लोगो को मेरी खुशी और हर्ष का पता चले ।

मै तो चाहता हूँ कि मैं किसी की अभिलाषा मे जान दे दूँ । लेकिन मुझे यह पसन्द नही कि दुखी जीवन व्यतीत करूँ ।

मैंने गौर किया और देखा तो वही लोग अभागे दिखाई दिये जो किसी को नही चाहते और फिर भी दुनिया से चिमटे रहते है ।

मैंने कान लगाकर सुना तो किसी को चाहने वाले—किसी की तमन्ना दिल मे लिये हुए इसान की आहे मुझे गाने के सुरो से अधिक मीठी लगी । इसलिये मैं चाहता हूँ कि मेरे दिल के हर कोने मे सौन्दर्य और प्रेम के लिये एक तडप हो ।

संध्या होती है तो कली अपने पत्तो को समेट लेती है—अपने शौक से गले मिलकर सो जाती है ।

सवेरा होता है तो सूर्य की किरणो का चुम्बन लेने के लिये

अपना मुँह खोलती है—कलियो का जीवन भी अभिलाषा और मिलन है ।

आँसू और मुस्कराहट—

आकाश मे मँडलाते हुए बादलो को देखो—समुद्र का पानी भाप बनकर उठता है । दूर ऊँचाई पर आपस मे मिलकर बादलो का रूप धारण कर लेता है । वादियो और घाटियो पर खुशी-खुशी उड़ता फिरता है । खेतो की ओर रोते हुए गिरता है । नालियो मे बहकर फिर अपने देश—समुद्र मे जा मिलता है ।

बादलो का जीवन—प्रतीक्षा और मिलन

आँसू और मुस्कराहट—

बिल्कुल इसी तरह आत्मा अविनश्वर जगत से इस संसार मे आती है । बादलो की तरह गम के पहाडो और खुशी की घाटियो पर उडती फिरती है—और एक दिन मौत की ठण्डी हवाओ से जा टकराती है और जहाँ से आई थी वही चली जाती है—प्रेम और सौन्दर्य के समुद्र की ओर—अल्लाह की तरफ ।

—जिब्रान

*** प्रेम का जीवन

वसन्त—

उठो, मेरी प्रेमिका, घाटियो मे चले ।

बर्फ पिघल गई, जिन्दगी जाग उठी और वादियो मे निकल आई ।

मेरे साथ चलो ताकि दूर खेतो मे वसन्त के पद-चिह्नो पर चले—आओ, टीलो पर चढकर उसके आसपास के खेतो की हरियाली का आनन्द लें ।

वसन्त की सुवह ने वह चादर फिर फैलादी है जो जाडे की लम्बी रातो ने समेट ली थी । सेब और अनार के वृक्ष वसन्त की चादर ओढकर शबे बरात की दुल्हन दिखाई देते है ।

अंगूर की वेले सजग हो गई और प्रेमियो की तरह एक दूसरे से गले मिलने लगी ।

नदियाँ घाटियों मे हर्ष के गीत गा-गाकर नाचने लगी ।

कलियाँ डालियो से ऐसे फूट पडी जैसे समुद्र की सतह पर झाग ।

आओ ! नरगिस की प्यालियो से वर्षा के बचे हुए आँसू पी ले ।

आनन्द-मग्न चिडियो के गीतों से अपना मन भरले—

और प्रातः समीर मे मिली हुई सुगन्धो पर डाका डाले ।

आओ ! उस घाटी के पास बैठकर प्रेम के चुम्बन ले जहाँ वनफशा का फूल छिपा बैठा है ।

गर्मी—

उठो ! मेरी प्रेयसी ! खेतो मे चलें।

सूरज की स्वाभाविक मुहब्बत से खेती पक गई और उसके काटने का समय आ गया।

जल्दी आओ ! ऐसा न हो कि पक्षी हमसे पहले पहुँच जाये—चीटियाँ पहल करदे और हमारी धरती पर अधिकार जमाले।

उठो ! धरती के फल इस तरह तोडे जैसे आत्माएँ वफा के बोये हुए बीज से भलाई का वह फल तोड़ चुकी है जिसको मुहब्बत ने हमारे दिल की गहराइयो मे बोया और मूल तत्त्वो की पैदावार से अपने खजाने वैसे ही भर दे जैसे जिन्दगी ने हमारे मन की दुनिया को भरपूर कर लिया।

चलो, प्रेयसि ! हरी-हरी घास के बिछौने पर लेटकर, नीले आकाश का लिहाफ ओढकर नरम घास के तिनको पर सिर रखकर सारे दिन की थकन दूर करले और वादी के कबूतरो की सरगोशियो को कान लगाकर सुने।

पतझड़—

उठो मेरी प्रियतमा ! बाग को चले, अंगूर का रस निकाले और सूखे मेवे जमा करले, कोमल कलियाँ निचोडे और आँखो के अवलोकन से एक कदम आगे वढकर दृश्य पर हाथ मारने का आनन्द उठाये।

आओ ! वस्ती की ओर चले। वृक्षो के पत्ते सूखकर पीले पड गये। हेमन्त समीर ने उनको बिखेर दिया। वह चाहती है कि गर्मी की खिली हुई कलियो के लिये उन पत्तो का कफन तैयार करके पहनाये।

चलो ! पक्षी समुद्र के किनारे की तरफ कूच कर गये। उपवन की प्रफुल्लता वे अपने साथ ले गये। कुमुदिनी और चँवेली के चेहरो

पर उपेक्षा बरस रही है और वे अपने बचे हुए आँसू धरती पर गिरा रही हैं।

आओ ! वापस चलें। नदियाँ रुक गईं। आँखों में खुशी के आँसू नहीं हैं। पहाडियाँ अपने सौन्दर्य के वस्त्र उतार चुकी—चलो प्रिये ! तबीअत बेज़ार हो रही है।

सर्दी—

निकट आ ! ओ मेरे जीवन की साथी निकट आ ताकि बर्फ की ठण्डी हवाये हमारे शरीरो को अलग न कर सके। इस अँगीठी के सामने मेरे पहलू मे बैठ जा। आग ही तो सर्दी का सबसे प्रिय फल है। मुझे आने वाले जीवन की बातें सुना। ठण्डी हवाओ की साँय-साँय से मेरे कान भारी हो गये हैं। कमरे की सब खिडकियाँ, सब रौशन-दान बन्द करदे। बाहर का भयानक वातावरण और बर्फ के नीचे उदास शहर मेरे दिल का ख़ून करते हैं। दिये मे तेल डाल । देखती नही कि वह बुझने लगा है। उसे अपने पास रखले ताकि मैं उसके उजाले मे तेरे चेहरे पर सर्दी की लम्बी रातो का लिखा पढ सकूँ। शराब का जाम ला ताकि जी भरकर पीले और बहार की याद ताज़ा करें।

मेरे निकट आ ! मेरी जान आग बुझ चुकी। राख उसको अपने सीने मे छुपाने लगी। मेरे निकट आ···आ···और मुझे अपने सीने से लगाले। दिया भी बुझ गया और रात के अँधेरे ने उसे भी अपनी लपेट मे ले लिया है। नीद की ऊँघ से आँखे भारी हो गईं। मुझे अपनी सुरमगी आँखो से घूरकर देख—इससे पहले कि नीद हमे अपनी गोद मे ले ले, तू मेरे सीने से लग जा—मेरा चुम्बन ले—बर्फ, तेरे चुम्बन के अलावा सारी सृष्टि पर छा चुकी है।

अफसोस ! अय मेरी प्यारी ! नीद का समुद्र कितना गहरा और सुबह का उजाला कितनी दूर है इस दुनिया मे।

★★★ दो लाशें

नदी के किनारे, अखरोट के वृक्षो की छाया मे एक गरीब किसान का लड़का बैठा, बड़ी शान्ति से बहते हुए पानी के मनोरम दृश्य को देखने मे लीन है। एक नवयुवक जो खेतो मे पला-बढा, जहाँ विश्व की हर वस्तु प्रेम की दुनिया मे साँस लेती है—वृक्षो की डालियाँ आपस मे गले मिलती है, फूलो से लदी डालियाँ एक-दूसरे पर झुकी रहती है, पक्षी एक-दूसरे की प्रशंसा के गीत गाते है, जहाँ हर स्वभाव आत्मा का रूप होता है।

बीस वर्ष का गरीब नवयुवक—जिसकी दृष्टि एक दिन पहले चश्मे के किनारे लडकियो के झुण्ड मे एक नवयुवती कुमारी पर पडी और वह उससे प्रेम करने लगा।

फिर जब उसे मालूम हुआ कि वह एक धनी माँ-बाप की बेटी है तो अपने दिल को धिक्कारने लगा। उससे अपनी कामुकता की शिकायत करने लगा। परन्तु धिक्कारने से दिल कही प्रेम करने से रुका है! और बुरा-भला कहने से कामुकता एक यथार्थ को कहाँ छोड सकती है! इंसान अपने दिल और कामुकता मे उस कोमल डाली की तरह है जो चौतरफा चलने वाली हवा के रास्ते मे खडी हो।

नवयुवक ने सामने देखा तो बनफ़्शा के फूल कमल के फूलो के साथ खिले हुए थे। नवयुवक अपने अकेलेपन पर खूब रोया।

प्रेम की मादकतापूर्ण घडियाँ छाया की तरह गुजरती हुई दिखाई दी। वह अपने आप से कुछ कह रहा था। उसके आँसू उसकी दर्द भरी

आँखो से टपक रहे थे और उसके दिल की उमगे पानी की तरह बह रही थी। वह कह रहा था—

"मुहब्बत मेरा मज़ाक उडाती है। मुझे खीचकर वह उस मैदान मे लाई जहाँ आशाएँ दुगुण दिखाई देती है। जहाँ अभिलाशाए आत्मा का स्वरूप है। प्रेम—जिसे मैंने अपना आराध्य बनाया था वह मेरा दिल तो आशाओ के महल मे उठाकर ले गया, लेकिन मेरी दुनिया एक गरीब किसान की झोपडी तक सीमित रखी और मेरे नफ्स (मन) को उस सौन्दर्य की चारदीवारी मे कैद कर दिया जिसके आसपास बडी-बडी हस्तियाँ मँडराती फिरती है और जिसकी सज्जनता उसे अपनी शरण मे लेती है ··· अच्छा! मुहब्बत! मैं तेरे इशारो पर चलने को तैयार हूँ। बता मैं क्या करूँ? मैं आग के भडकते हुए शोलो मे तेरे पीछे चला और मेरा शरीर झुलस गया। मैंने अपनी आँखे खोली तो चारो ओर अधकार ही अधकार पाया। मैने ज़बान खोलनी चाही तो आह! अफसोस के सिवाय मै कोई बात करने के काबिल नही रहा।

"अय मुहब्बत! मै दुर्बल और अशक्त हूँ और तू चतुर और बुद्धिमान। फिर तू क्यो मेरे मुकाबले पर आती है?

"मैं निर्दोष हूँ और तू न्यायप्रिय—फिर तू क्यो मुझ पर अत्याचार करता है?

"तेरे सिवाय मेरा कोई सहायक नही फिर तू क्यो मुझे अपमानित करता है?

"तू ही मेरे अस्तित्व का कारण है फिर क्यो मुझे अकेला छोडता है?

"तुझे अनुज्ञा है कि यदि तेरी इच्छा के विरुद्ध मेरी धमनियो मे खून दौडे तो तू उसे धरती पर बहादे।

"यदि तेरे बताये हुए मार्ग के अतिरिक्त मेरे कदम उठे तो तू उन्हें काट दे।

"मेरे शरीर के साथ तू जो चाहे कर परन्तु मेरे मन को स्वतन्त्र छोड दे कि वह तेरी छत्रछाया में उन खेतो मे स्वतन्त्र जीवन व्यतीत कर सके।

"छोटी-छोटी नदियाँ अपने प्रियतम—समुद्र की ओर जा रही हैं।

"कलियाँ अपने प्रियतम—सूरज को देखकर मुस्कराती हैं।

"बादल अपने देश—वादी की तरफ उतर आते हैं।

"परन्तु न नदियाँ मेरे हाल से परिचित हैं, न कलियाँ मेरी फरियाद सुनती है और न बादलो को मेरी विपत्तियो का ज्ञान है।

"परन्तु मुहब्बत तूने मुझे अपनी विपत्तियो मे निस्सहाय पाया, मुझे अपने प्रेमोन्माद मे अकेला देखा और उस प्रियतमा से दूर पाया जो न तो मुझे अपने बाप की फौजो का सिपाही देखना पसन्द करती है और न अपने महल का सेवक ही देख सकती है।"

इतना कहकर नवयुवक रुक गया। कान लगाकर किसी की आवाज सुनने लगा। ऐसा ज्ञात होता था कि वह नदी की कलकल और डालियो एवं पत्तो की सरसराहट से कुछ सीखना चाहता है। थोडी देर के बाद फिर बोला—

"अय प्रेयसी! जिसके नाम से डरते हुए मै उसका नाम ज़बान पर नही ला सकता! अय महानता के पर्दो और आतंक की दीवारो मे छुपी हुई प्रेयसी!

"अय स्वर्ग की अप्सरा—जिसके मिलने की आशा मुझे संसार के स्रष्टा के दरबार के अलावा कही नही है—जहाँ समता का राज्य होगा—छोटे-बडे का भेद-भाव न होगा।

"अय वह कि तेज तलवारे तेरे इशारो पर चलती है—विद्रोहियो की गर्दनें तेरे सामने झुकती है। घमण्डी सम्राटो के खज़ाने और एकान्त-वासी आराधको के पूजा-स्थानो के दरवाज़ें तेरे लिए चौपट खुले रहते हैं।

"तूने ऐसे दिल पर अधिकार कर लिया है जिसको प्रेम की मदिरा ने पवित्र कर दिया है। ऐसे आत्मा को गुलाम बना लिया है जिसको तेरे स्रष्टा ने मान दिया और ऐसी बुद्धि छीन ली जो कल तक इस हरे-भरे मैदान मे स्वतत्र पक्षियो की तरह हरी-हरी खेती से आनन्दित हो रहा था और आज—प्रेम के हाथो कैदी बन गया है।

"अय दुनिया की सबसे सुन्दर औरत ! मैंने तुझे देखकर जान लिया कि मेरा संसार मे आने का उद्देश्य क्या है ? और जब मैंने तेरे उच्च स्थान और अपनी न्यूनता पर दृष्टि डाली तो मुझे मालूम हुआ कि खुदा के भेद ऐसे भी है जहाँ इसान की पहुँच नही हो सकती, और कुछ रास्ते ऐसे भी है जो इंसान के रास्तो से भिन्न हैं परन्तु मुहब्बत उन पर इंसान ही को खेचते हुए ले जाती है।

"जब मैंने तेरी हिरनी जैसी आँखे देखी तो मुझे मालूम हुआ कि जीवन एक स्वर्ग है जिसका दरवाज़ा इंसानो का दिल है। परन्तु जब अपने और तेरे वर्ग पर दृष्टि डाली तो ज्ञात हुआ कि इस संसार मे मेरे रहने के लिये कोई स्थान नही है। जब मैंने तुझे तेरी सहेलियो के झुर-मुट मे पहली बार देखा और यो अनुभव हुआ जैसे फूलो के गुल-दस्ते मे गुलाब का फूल है तो मुझे भ्रम हुआ कि मेरे स्वप्नो की दुल्हन साकार होकर मेरे सामने आगई है परन्तु जव तेरे कुटुम्ब के उच्च स्थान को देखा तो विश्वास हो गया कि गुलाव के फूल तोडने से पहले काँटे उँगलियो को घायल करते है और स्वप्न की सुन्दर दुनिया को जाग्रत अवस्था का एक क्षण नष्ट-भ्रष्ट कर देता है।"

इतना कहकर नवयुवक चश्मे की ओर चला। उसके शरीर के अग-प्रत्यंग जवाब दे चुके थे। उसका दिल टूट चुका था और वह दुख और निराशा की मूर्ति बना हुआ था। थोडी देर के वाद उसने फिर कहना शुरू किया—

"अय मृत्यु की देवी ! आ और मुझे इस दुख भरे जीवन से मुक्ति

दिलादे। वह धरती, जिसके काँटे उसकी कलियो का खन करते हैं, रहने के योग्य नही।

"जल्दी आ और मुझे अपनी गोद में ले ले ताकि मैं अपनी आँखो से वह दिन न देखने पाऊँ जब मुहब्बत की जगह धार्मिक मान शासन करे।

"अय मौत मुझे जिन्दगी की कैद से छुडा दे। इस दुनिया मे दो दोस्तों के मिलने से अविनश्वर ससार मे उनका मिलना ज्यादा अच्छा है। मैं अविनश्वर जीवन ही में अपनी प्रेयसी की प्रतीक्षा करूँगा और वही उससे मिलूंगा।"

नवयुवक चश्मे के किनारे पहुँचा। शाम हो चुकी थी। सूर्य देवता अपनी सुनहरी चादर हरे और लहलहाते हुए खेतो पर से समेटने लगे थे। वह वहाँ बैठकर उसी घास पर अपने आँसू बहाने लगा जिसको थोड़ी देर पहले उसकी प्रेमिका—वह धनी लडकी अपने पैरो तले रौद चुकी थी। उसका सर सीने की तरफ झुका हुआ यो मालूम होता था मानो वह अपने दिल को बाहर निकलने से रोक रहा है।

इसी समय अखरोट के वृक्षो की ओट से एक नवयुवती नाज से अपना दामन हरी-हरी घास पर घसीटती हुई प्रकट हुई और आकर नवयुवक के पास खडी हो गई। अपना कोमल हाथ उसके सर पर रखा। नवयुवक ने उसकी ओर उस व्यक्ति की तरह देखा जिसे सूरज की किरणो ने सोते से जगा दिया हो। नजरे उठाते ही अपनी प्रेमिका—उसी धनवान की लडकी को अपनी आँखो के सामने पाया। मूसा की तरह जब उसने तूर पर खुदा का जलवा अपने सामने चमकता हुआ पाया तो घुटनो पर झुक गया। भय, सौन्दर्य के आतंक और हर्ष के कारण उसकी ज़बान बन्द रही परन्तु आँखो ने, जिनसे लगातार अश्रु बह रहे थे, दिल का सारा हाल कह सुनाया।

नवयुवती ने उसे गले लगाया। उसके होंटो का चुम्बन लिया।

उसकी आँखो पर मुँह रखकर उसके गरम-गरम आँसुओ को पिया और वशी से भी मधुर आवाज मे उससे कहने लगी—

"मेरे प्रियतम ! मैंने तुझे अपने स्वप्नो की दुनिया मे देखा। मैंने तेरा अनुध्यान उस समय अपने सामने रखा जब सारी दुनिया नीद की गोद मे मस्त पडी हुई थी। तू मेरा वह साथी है जिसकी मुझे तलाश थी और मेरे सौन्दर्य का वह अधिकारी है जिसको मुझसे उस समय अलग किया गया था जब मुझे इस दुनिया मे भेजा जाने लगा था।

"मेरे प्रियतम ! मैं छुपकर केवल इसलिये आई हूँ कि तुझसे मिलूँ। मेरा प्रयत्न सफल हुआ। और देख, इस समय मेरी कोमल बाहें तेरे गले का हार है।

"दुखी न हो ! किसी दूर की बस्ती मे—जीवन और मृत्यु का जाम एक साथ पीने के लिये मै अपने बाप के उच्च व्यक्तित्व को छोड़-कर आई हूँ।

"मेरे प्रियतम ! आओ, इंसानो की इस बस्ती से दूर एक नई दुनिया बसाये।"

दोनो प्रेमी—दोनो आशिक चल पडे। रात का अधकार दोनो को दुनिया की नजरो से छुपा रहा था। रात की भयानकता से निडर वे चले जा रहे थे।

कुछ दिनो के बाद धनी व्यक्ति के जासूस ने शहर से दूर दो लाशें देखी। एक के गले मे सोने का हार था। पास ही पत्थर की एक शिला पर लिखा था—

"हमे मुहब्बत ने मार दिया है। कौन है जो हमे अलग कर सके ! मौत ने हमे अपनी गोद मे जगह दे दी है। कौन है जो हमे वापस ला सके !"

★★★ मुर्दों की बस्ती में

कल शहर के कोलाहल से तंग आकर, हरे-भरे खेतो के शान्तिमय वातावरण से गुजरकर बस्ती से बाहर ऊँचे-ऊँचे टीलो पर गया। प्रकृति के सर्वोत्तम वस्त्र—हरी घास से वह ढके हुए थे। टीले पर चढकर मैंने शहर पर एक दृष्टि डाली। उसके ऊँचे-ऊँचे महल और भव्य इमारतें कारखानो के काले धुएँ के पीछे, जो काली-काली घटाओ की तरह आकाश मे घूम रहा था—आँखो से ओझल हो गये थे।

मैं इस शान्त वातावरण मे बैठकर मानव, उसके जीवन और उसकी कार्य-कुशलता पर विचार करने लगा। परिश्रम और कष्ट के अलावा कोई चीज नजर न आई। मैंने अपनी कल्पना को दूसरी तरफ मोड दिया और निश्चय कर लिया कि इस मनोरम वातावरण को मानवी कर्मो के दुखप्रद अनुध्यान से मलिन न करूँगा।

मैने हरे-भरे खेतो को देखा। वह अपनी मृदुलता और हरे-भरे-पन से खुदाई तख्त मालूम हो रहे थे। खेतो के बीच मे मेरी दृष्टि एक कब्रस्तान पर पड़ी जिस मे सर्ज के वृक्षो से घिरी हुई कब्रे सामने दिखाई दे रही थी।

मै उस स्थान पर था जिसके एक ओर जीवितो का नगर अपने ऊँचे प्रासादो और कोलाहलपूर्ण वातावरण के साथ मेरे सामने था। दूसरी ओर मुर्दों का शहर नीरवता की मूर्ति बना खडा था। इन दोनो

बस्तियों के बीच टीले पर बैठकर मैं दोनो के हालात पर विचार करने लगा—

एक—जीवित इंसानो की बस्ती—जहाँ लगातार दौड-धूप और कभी न खत्म होने वाली हरकत—और दूसरी ओर—मुर्दा लाशों की बस्ती—शान्त वातावरण और कभी आन्दोलित न होने वाली—मैं सोचने लगा—एक ओर जीवितो की बस्ती—आशा और निराशा की दुनिया—प्रेम और द्वेष की दुनिया—पूँजीपतियो और मजदूरो की दुनिया—मानने वालो और इन्कार करने वालो की दुनिया है।

दूसरो ओर—मुर्दा लाशो की बस्ती—नितात—हर तरफ मिट्टी के तोदो पर तोदे दिखाई दिये—रात के सन्नाटे मे मिट्टी के इस तोदे को चाक करके पौधा अपना सर निकालता है जहाँ किसी प्राणी की आवाज वातावरण को मलिन नही करती।

मैं अपने विचारो मे लीन था—दोनो बस्तियो की स्थिति पर विचार कर रहा था कि अचानक मेरे कानो मे बाजो की आवाज पडी और आँखो ने देखा कि जीवित इसानो की एक भीड चली आ रही है। उसके आगे-आगे शोक और दुख का बैण्ड बज रहा है। वातावरण गमनाक आवाजो से भरा जा रहा है। जीवित इंसानो का एक समूह है जिनके चेहरो से महानता और गम्भीरता टपक रही है और जिसमे विभिन्न रगो के चेहरे हैं—यह एक धनाढ्य व्यक्ति का जनाजा था—एक मुर्दा लाश जिसके पीछे-पीछे जीवितो का समूह था—रोता हुआ—चीखता-चिल्लाता हुआ।

जीवित इसानों का यह जनसमूह जनाजागाह पहुँचा। पादरी एकत्रित होकर जनाजा पढने और सुगन्धो की धूनी देने लगे। बैण्ड बजाने वालों की टुकडी एक ओर को हटकर गम का बैण्ड बजाने लगी। थोडी देर मे उन महान् व्यक्तियों की टुकडी आगे बढी और मँजी हुई भाषा तथा चुने हुए शब्दो मे अपने जोरदार भाषणो से मरने वाले

की प्रशंसा की । फिर कविगण आगे बढे और मरने वाले की शान में लम्बे-लम्बे मरसिये पढे गये ।

मुर्दे को दफन करने के बाद ये लोग एक ऐसी कब्र छोड गये जिसकी तैयारी मे कब्र बनाने वालो और चित्रकारो ने अपनी कला को चरमसीमा पर पहुँचा दिया था ।

मैं दूर से यह सारा दृश्य देखता रहा । जुलूस शान्तिपूर्वक शहर की तरफ लौटा । सूरज धीरे-धीरे अपनी मजिल की तरफ लौटने लगा । प्रकाश विलीन होने लगा और दुनिया पर अधकार छाने लगा ।

इस झुटपुटे मे दूर से दो व्यक्ति आते हुए दिखाई दिये । उनके कंधो पर लकडी का बना हुआ एक ताबूत था । उनके पीछे कधे पर एक दूध पीता बच्चा उठाये, मैले और फटे-पुराने कपडे पहने एक औरत सर झुकाये चली आ रही थी । और उसके पैरो मे एक कुत्ता जो कभी औरत की तरफ ललचाई हुई नजरो से देखता था और कभी ताबूत पर अपनी दृष्टि गाड देता था । एक गरीब का ताबूत—जिसके पीछे उसकी पत्नी शोक और व्यथा के आँसू बहाती हुई—एक बच्चा जो माँ की आँखो मे आँसू देखकर रो रहा था और एक वफादार कुत्ता जो विधवा ही की तरह गम से निढाल होते हुए भी चल रहा था—

ये लोग कब्रस्तान पहुँचे । रगीन और चित्रित कब्रो से दूर—कब्रस्तान के एक कोने मे—एक खड्डे मे लाश को दफन कर दिया और चुप्पी साधे हुए वापस लौट गये । कुत्ता अपने मालिक की अन्तिम विश्रामगाह की तरफ बार-बार देख रहा था ।

मेरे देखते-देखते ये लोग वृक्षो के पीछे गायब होगये । ये दोनों दृश्य देखकर मैंने जीवित इसानो के शहर की तरफ देखा और दिल में कहा—

"यह भी शक्तिशाली सरमायादारो का शहर है ।"

फिर मुर्दा लाशो की दुनिया की तरफ देखा और कहा—"यह भी शक्तिशाली सरमायादारो की दुनिया है।

"अय खुदा—अत्याचार सहन करने वाले मज़दूरो की दुनिया कौनसी है ?"

अचानक मेरी दृष्टि आकाश मे उडते हुए बादलो पर पडी जिनके किनारे सूरज की किरणो से लाल होकर चमक रहे थे। दिल ने मुझे पुकारा—यह है गरीब मज़दूरो की दुनिया ।

★★★ कवि की मृत्यु ही उसका जीवन है

रात के अंधकार ने शहर की आबादी पर अपनी काली चादर फैला दी। बर्फ ने उसे अपने सफेद वस्त्र पहनाये। बसने वाले सर्दी के भय से अपने-अपने महलो, मकानो और झोपड़ियो मे घुस गये। ठण्डी हवाये मकानो से टकराकर एक आवाज़ पैदा करने लगी जैसे कब्रो की नीरव बस्ती मे कोई शोकालाप करने वाला मौत का मर्सिया पढ रहा हो।

शहर के किनारे—आबादी से जरा हटकर—एक पुराना मकान था। मकान की दीवारे जीर्ण-जीर्ण हो चुकी थी और छत बर्फ के बोझ से दबी जा रही थी।

मकान के एक कोने मे—फटे-पुराने बिस्तर पर लेटा हुआ एक नवयुवक सामने जलते हुए दिये को टकटकी बाँधकर देख रहा है जो रात के भयानक अंधकार पर विजय पाने का प्रयत्न कर रहा था। नवयुवक, जिसकी आयु अपनी बहार की मजिले तय कर रही थी—जान गया था कि जीवन की कष्टदायक घडियो से मुक्ति मिलने का समय निकट है। वह मृत्यु की प्रतीक्षा मे पडा था। उसके पीले चेहरे पर आशा की झलक दिखाई दे रही थी। उसके होटो पर दुखी मुस्कराहट के लक्षण थे—एक कवि—जिसकी सृष्टि का उद्देश्य यह था कि अपनी कविताओ से मानव-हृदय को प्रफुल्ल करदे—पूँजीपति इसानो की दुनिया मे भूक से मर रहा था। एक पवित्र आत्मा जो खुदा की तमाम नेमतो को छोडकर आया था कि लोगों का जीवन का राज़ समझादे

—उनकी दुनिया इस हालत मे छोड रहा था कि मानवता के होटो पर अभी मुस्कराहट के लक्षण भी नही थे। मृत्यु और जीवन के संघर्ष का सामना करने वाला एक इसान ऐसी स्थिति मे अपनी जान दे रहा था कि उसके सामने उसके एकाकी जीवन के साथी एक दिये और कागज के कुछ टुकडो के अतिरिक्त, जिन पर उसके पवित्र विचार अकित थे—कुछ न था।

नवयुवक ने अपनी शक्तियो को, जो जवाब दे रही थी—एकत्रित किया। अपने हाथ ऊपर को उठाये और अपनी पलको को यो गति दी मानो वह चाहता है कि अन्तिम समय मे उस पुरानी छत को फाडकर बादलो से परे सितारो की दुनिया पर दृष्टि डाले। फिर कहने लगा—

"अय मौत! आ, मैं तुझे दिल से चाहता हूँ। मेरे निकट आ और इस भौतिक दुनिया की जंजीरो को तोडकर रखदे। मैं इनको उठाते-उठाते तग आ गया हूँ। अय मधुर मौत! आ और मुझे इंसानो की इस बस्ती से उठाले। ये मेरे साथ सिर्फ इसलिये अपरिचितो का सा व्यवहार करते है क्योकि मैं फरिश्तो की जबान से दूसरी दुनिया की सुनी हुई कहानियाँ इनकी भाषा मे इनको सुनाता हूँ। मौत, मेरे पास जल्दी आ। इसान मुझे अकेला छोड गये। ये मुझे केवल इसलिये भूल गये कि मैं इनकी तरह सम्पत्ति एकत्रित करने का लोलुप नही था और कमजोरो का शोषण करने से घृणा करता था।...अय मधुर मौत आ और मुझे उठाले। इस संसार के रहने वालो को मेरी आवश्यकता नही। मुहब्बत से मुझे अपने सीने के साथ लगाले। मेरे होटो को चुम्बन दे, जिन्होने कभी माँ के चुम्बन का आनन्द नही उठाया—बहन के गालो का चुम्बन नही लिया और न किसी प्रेयसी के श्वेत दाँतो को इन्होने छुआ। अय मेरी प्यारी मौत! शीघ्रता कर और मुझे गले लगाले।"

मृत्यु-शैया पर पडे हुए नवयुक के बिस्तर के पास—एक सुन्दर स्त्री की कल्पना आई जो बर्फ से ज्यादा श्वेत कपडे पहिने हुए थी और जिसके हाथो मे स्वर्ग के हरे पत्तो से तैयार किया हुआ मुकुट था। स्त्री नवयुवक के पास आई, उसे गले लगाया, उसकी आँखो को बन्द कर लिया ताकि वह दिल की आँखो से उसे देखे—मुहब्बत से उसके होट चूमे—एक चुम्बन जिसने नवयुवक के होटो पर मुस्कराहट के चिह्न छोड दिये।

घर खाली हो गया। केवल मिट्टी का ढेर रह गया या कागज के पन्ने जो अन्धकार के कोनो मे बिखरे पडे थे।

समय गुजरता रहा। इस बस्ती के लोग अपनी बदमस्तियो और मदहोशियो मे बेहोश पडे रहे। जब वे होश मे आये और आँखो से मस्ती का नशा जाता रहा तो—एक दिन—शहर के मध्य मे—सार्वजनिक पार्क मे—कवि की प्रतिमा स्थापित कर दी गई और उसका वार्षिक उत्सव मनाने लगे।

आह ! इंसान कितना मूर्ख है !

*** एक स्वप्न

खेत के बीच मे एक स्वच्छ नहर के किनारे एक सुन्दर पीजरा पडा नजर आया। पिंजरे के एक कोने मे मरी हुई चिडिया पडी थी और दूसरे कोने मे दो प्यालियाँ पड़ी थी जिनका दाना और पानी समाप्त हो चुका था।

मैं खामोश खडा रहा। निश्प्राण पक्षी की आत्मा और नहर की आवाज़ मे एक शिक्षा थी जो मेरे अन्त करण से सम्बोधित थी और मेरे दिल से कुछ कह रही थी। मै सोचने लगा कि यह बिचारा पक्षी नहर के किनारे होते हुए प्यास से मर गया और खेतो के बीच पडे रहने के वावजूद—जहाँ से ससार को अन्न बँटता है—वह भूख से व्याकुल हो गया। बिलकुल उसी तरह जैसे किसी सरमायादार को उसके सोने-चांदी के खज़ाने मे बन्द कर दिया जाय और वह अनन्त सम्पत्ति के बीच भूख और प्यास से तडप-तडपकर मर जाय।

थोडी देर मे मैं क्या देखता हूँ कि वह पिंजरा अचानक एक इसान के रूप मे परिवर्तित हो गया और उस पक्षी ने उसके हृदय का रूप धारण कर लिया जिसमे एक गहरा घाव था और उससे लाल-लाल रक्त वह रहा था। घाव के किनारे दुखी औरत के होटो की तरह दिखाई दे रहे थे।

घाव से खून की बूंदो के साथ-साथ एक आवाज निकलती हुई सुनाई दी जो कह रहा था—"मैं वही इसानी दिल हूँ जो इस भौतिक दुनिया का कैदी वना रहा और उस मिट्टी के पुतले—इंसान—के वनाये

हुए कानून से कत्ल कर दिया गया। सौन्दर्य की खेती के बीच, जिन्दगी के चश्मो के किनारे मुझे इसानी कानून के पिजरे मे गिरफ्तार कर लिया गया। मै मुहब्बत की गोद मे—खुदा की पैदा की हुई धरती पर लाचार होकर मर गया। इसलिये कि इस धरती के फलो और मुहब्बत के सुन्दर परिणाम से मुझे वचित कर दिया गया। जो मै चाहूँ वह इसान की परिभाषा मे लज्जा और जिसकी मैं इच्छा रखूँ वह उनके फैसले के अनुसार अपमान गिना जाता है।

"मै मानव-हृदय हूँ। संसार के अन्धकार मे फँसकर निर्जीव हो गया। निरर्थक भ्रमो का कैदी बनकर विवश हो गया। प्रसिद्धि के पथ-भ्रष्ट मार्ग पर चलकर मेरी चेतना जाती रही—और अब भी इंसान की ज़बान गूँगी है, उसकी आँखे आँसू नही बहाती बल्कि मुस्कराती है।"

मैने ये बाते घायल दिल से बहते हुए खून के साथ निकलती हुई सुनी। और इसके बाद न तो मैंने वहाँ कुछ देखा न कोई आवाज़ ही सुनी। मुझ पर अपनी वास्तविकता प्रकट हो गई।

*** सौन्दर्य

"सौन्दर्य ही दार्शनिको का धर्म है" —एक हिन्दुस्तानी कवि

अय बिखरे हुए धर्मों के रास्तो मे भटकने वालो ! और प्रतिकूल मतो की दीवारो मे उद्विग्न फिरने वालो ! स्वीकृति और अनुमति के बन्धनो पर खुदा के इन्कार की स्वतन्त्रता को प्रधानता देने वालो ! और किसी मार्ग-दर्शक के पीछे से—"कोई नही" की रट लगाने वालो ! —आओ और सौन्दर्य के धर्म पर ईमान लाओ और उसे खुदा समझकर उससे डरो। खुदा की सारी सृष्टि मे उसका सौन्दर्य प्रकाशमान है और तुम्हारे सारे ज्ञान का स्रोत यही सौन्दर्य है। उन लोगो को छोडो जो धर्म को वेकारी का मशगला समझते है और धन की लोलुपता तथा जीवन के भोग-विलास मे दिन-रात खोये रहते हैं। सौन्दर्य की खुदाई पर ईमान लाओ। तुम सौन्दर्य को देखकर ही जीवन से प्यार करते हो और उसी तरह नेकी से मुहब्बत की तरफ ध्यान दो। वह औरत की सीढी से तुम्हे अक्ल का आईना दिखादेगा और तुम्हारी विद्रोही आत्माओ मे जीवन के जौहर भर देगा।

और अय बेकार बातो के गहन अंधकार मे अपनी आयु गँवाने वालो ! और व्यर्थ की कल्पनाओ मे लीन रहने वालो ! सौन्दर्य तुम्हे ऐसे यथार्थ का मार्ग दिखायेगा जो तुम्हारी शंकाओ को दूर कर देगा। वह ऐसा प्रकाश है जो असत्य के अंधकारो मे तुम्हारा मार्ग-प्रदर्शन करेगा। देखो, वसन्त के आगमन और सूर्योदय पर विचार करो— सौन्दर्य सोचने वालो ही के हिस्से मे है—पक्षियो के गीत—डालियो

की आवाज़ और नदी के कोलाहल को कान लगाकर सुनो—सौन्दर्य सुनने वालों ही के भाग्य मे है। बच्चे की निश्चिन्तता, जवान के दिल, यौवन की शक्ति और बूढो की बुद्धि को देखो—सौन्दर्य देखने वालो को सम्मान की दृष्टि से देखता है।

नरगिसी आँखों की—गुलाब के फूल की तरह गालो की—और कली के समान मुँह की प्रशंसा के गीत गाओ। सौन्दर्य ऐसे गीत गाने वालो का आदर करता है।

सर्वकद प्रेमिका की रात की तरह काली जुल्फो की और हाथी-दांत जैसी श्वेत गर्दन की तारीफ करो। सौन्दर्य ऐसे तारीफ करने वालो के साथ फिरता है।

सुन्दर प्रतिमा को सामने बिठाकर उसकी आराधना करो। दिल को प्रेम की बालिवेदी पर चढ़ादो। सौन्दर्य ऐसे आराधको को अच्छा बदला देता है।

अय सौन्दर्य के सूत्रो को पढने वाले लोगो! ख़ुश हो जाओ, गम न खाओ। न तुम्हें कोई भय है न तुम्हे उदास होना चाहिये।

*** आग के शब्द

मेरी कब्र के पत्थर पर यह लेख खुदवादो—

"यह उस व्यक्ति की सडी हुई हड्डियाँ है जिसका नाम पानी की सतह पर लिखा गया।"

—जॉन कीट्स

क्या हमारी राते ऐसी ही गुजरेगी ? क्या इसी तरह हम ज़माने के पैरो मे रौंदे जायेगे ? क्या इसी तरह समय हमे अपनी लपेट मे लेगा और स्याही की जगह पानी से लिखे हुए नाम के सिवा हमारी कोई यादगार बाक़ी नही रहेगी ?

क्या यह प्रकाश विलीन हो जायगा ? यह मुहब्बत खत्म हो जायगी और हमारी अभिलाषाएँ मिट जायेगी ?

क्या मृत्यु हमारी आशाओ के महल गिरा देगी ? हमारी बातें हवा मे उड जायेगी और मौत की छाया हमारे कर्मो पर पड़ जायेगी ?

क्या यही जीवन है ? क्या जीवन—भूत जो गुजर गया और उसके निशान मिट गये—वर्तमान जो तीव्र गति से भूत के साथ मिलने का प्रयत्न कर रहा है और—भविष्य, जिसका कोई अर्थ नही—मगर वर्तमान है या भूत—के सम्मिश्रण ही का नाम है ?

क्या हमारी खुशियाँ और गम यो ही बीत जायेगे और हमे उनके परिणाम तक का ज्ञान न होगा ?

क्या इंसान उस झाग की तरह ही रहेगा जो थोडी देर तक पानी की सतह पर फिरता है । हवा आती है और उसे नष्ट-भ्रष्ट कर देती है ?

नही, मुझे अपनी ज़िन्दगी की कसम । जिन्दगी की वास्तविकता को पाना ही जिन्दगी है। ऐसी ज़िन्दगी जिसका आरम्भ माँ के पेट से नही और जिसका अन्त अँधेरी कब्र मे नही । जिन्दगी के ये चन्द साल शाश्वत जीवन की एक घडी के बराबर भी नही । दुनिया का यह चार दिन का जीवन अपने सारे उपकरण के साथ—एक स्वप्न है—उस चेतना से पहले जिसे हम मौत के नाम से पुकारते है और उससे डरते रहते है । एक ऐसा स्वप्न जिसमे किये हुए सब कर्म ख़ुदा—सौन्दर्य—की आज्ञा से बाकी रहेंगे ।

..........हर उस मुस्कराहट को जो हमारे होटो पर खेलती है—और हर उस ठण्डी आह को जो हमारे दिल की गहराइयो से निकलती है और प्रेम के हर चुम्बन से जो आवाज निकलती है फरिश्ते गम से निकले हुए आँसुओ की एक-एक बूँद गिनते रहते हैं। और हमारी जबान से खुशी के वक्त निकलता हुआ हर गीत हमारी आत्मा के कानो तक पहुँचता रहता है ।

वहाँ—आने वाले जीवन मे हम अपनी ज़बान से निकले हुए गीत अपने कानो से सुनेगे और अपने दिल की खुशियाँ अपनी आँखो से देखेगे । वहाँ हम पर उस ख़ुदा की ख़ुदाई की वास्तविकता प्रकट हो जायेगी, जिससे हम निराशा की घटाओ मे घिरकर यहाँ इन्कार करते है ।

वह दुराचारिता जिसे आज दुर्बलता के नाम से पुकारा जाता है—कल उस जंजीर की तरह होगी जिसका अस्तित्व इंसान के जीवन का सिलसिला पूर्ण करने के लिये आवश्यक होगा ।

यह परिश्रम जिसका बदला आज हमे नही मिल रहा है, वह हमारे दूसरे जीवन मे हमारे साथ उठकर हमारा मान बढ़ायेगा । और वे

विपत्तियाँ जो आज हम झेल रहे है—कल हमारे सर गर्व का मुकुट बनकर चमकेगी ।

याद रखो ! यदि पश्चिम की उस बुलबुल—कीट्स—को मालूम होता कि उसके शेर इंसानो के दिलो मे सौन्दर्य-प्रेम का भाव सदैव पैदा करते रहेगे तो वह कहता—

मेरी कब्र के पत्थर पर खुदवादो—

"यहाँ उस इंसान की हड्डियाँ दफन है जिसका नाम आकाश मे आग के अक्षरो से लिखा गया है।"

*** उजड़े दयार में

चाँद ने ससार पर अपनी स्वच्छ चाँदनी की चादर फैलादी और चारो ओर नीरवता छा गई। वह उजडी हुई बस्ती एक भयानक देव की तरह दिखाई देने लगी जो रात के अंधकार के हमलो पर हँसता हो।

उस समय मेरी कल्पना मे समुद्र की नीली सतह से उठती हुई भाप की तरह दो काल्पनिक चित्र उत्पन्न हुए और एक ऊँची मीनार पर जाकर बैठ गये।

थोडी देर मे एक ने सर उठाया और दूर के पहाड से टकराकर लौटने वाली आवाज़ के समान बोला—

प्रिये ! ये उन बस्तियो के मिटे हुए चिह्न है जो मैंने तेरे लिये बसाईं और यह उस आलीशान महल के खण्डहर है जो मैंने तेरी खुशी के लिये खड़ा किया। अब ये इमारतें गिर गई है और महल ढह गया है। इनकी शान खाक मे मिल गई। केवल एक निशान बाकी है जो आने वाली पीढियो को अपनी महानता का विश्वास दिलायेगा और वह भग्नावशेष बाकी है जिनको देखते हुए लोग इस स्थान को सम्मान की नजरो से देखेंगे। मेरी प्यारी ! ध्यान दो। दुनिया के मूल तत्त्व इस मजबूत शहर पर भी छा गये। जमाने की गर्दिश ने मेरी बुद्धिमानी को भी घृणा की दृष्टि से देखा। जिस शहर को मैंने आवाद किया था वह बरबाद हो गया। अब मेरे पास उस मुहब्बत के सिवा—जिसका स्रष्टा तेरा सौन्दर्य है और सौन्दर्य के परिणाम के अलावा

जिसको तेरी मुहब्बत ने जीवन प्रदान किया—और कुछ भी नही।

मैंने यरुशलम मे एक आराधनाघर की बुनियाद डाली। मसीही पादरियो ने उसका सम्मान किया, लेकिन ज़माने के निष्ठुर हाथो ने उसे बाकी न रहने दिया। और मैंने अपनी पसलियो मे मुहब्बत के लिये एक छोटा सा घर बसाया। खुदा ने उसे सम्मान दिया। उस पर ज़माने की तेज हवाओ का कोई असर नही।

मैंने प्रत्यक्ष वस्तुओ और भौतिक कामो की वास्तविकता मालूम करते-करते अपनी उमर गुजारदी। इसान ने कहा— "कितना शक्तिशाली शासक है।" फरिश्तो ने कहा—"कितना नादान है।"

फिर मैंने—प्यारी! तुझे देखा, तेरी मुहब्बत के गीत गाये। फरिश्ते सुनकर खुश हुए परन्तु इसान अपनी वेहोशी की नीद मे सोता रहा।

मेरे शासन के दिन—मेरे प्यासे प्राण और मेरी आकाश मे बसने वाली आत्मा के बीच पर्दे की तरह बाधक थे। जब मैंने तुझे देखा—मुहब्बत जाग उठी—पर्दे हट गये। बीते हुए दिनो पर हाथ मलने लगा और चाँद सूरज की रोशनी मे रहने वाली हर चीज को बेकार समझने लगा।

मैंने मजबूत कवच और टिकाऊ ढाले तैयार कराई और सारे इंसान मुझसे डरने लगे। लेकिन जब मुहब्बत की आग मेरे सीने मे भडक उठी तो मैं अपने कवीले की नज़रो मे भी गिर गया! मौत ने आकर इन तमाम हथियारो को मिट्टी मे दवाकर केवल मेरी मुहब्बत को खुदा के दरबार मे पेश किया।

थोडी सी खामोशी के वाद दूसरी काल्पनिक तस्वीर ने कहा—"जिस तरह कली अपना जीवन और सुगन्ध मिट्टी से प्राप्त करती है

उसी तरह शक्ति और दर्शन आत्मा को भौतिक कमज़ोरियो और उसकी गलतियो से बचाता है।"

फिर दोनो तस्वीरे आपस मे मिलकर एक हो गईं और वहाँ से चली गईं। कुछ समय बीतने के बाद हवा ने यह बात फैलादी—

"मुहब्बत के सिवा किसी चीज की रक्षा न करो। केवल मुहब्बत ही शाश्वत है।"

*** मैंने देखा

यौवन मेरे सामने से गुज़रा। मैं उसके पीछे-पीछे चला। हम दूर एक खेती मे पहुँचे। यौवन ठहर गया। हाथीदाँत के समान श्वेत बादलो को जो दूर क्षितिज पर उड रहे थे—उन वृक्षो को जो अपनी नगी डालियो से ऊँचाई की ओर सकेत कर रहे थे मानो आकाश से अपने हरे पत्तो की भीख माँग रहे है—को देखकर चिन्ता मे पड गया। मैंने उससे कहा—

"यौवन! हम कहाँ पहुँच गये ?"

'विस्मय की खेती मे—होशियार होजा।"

"हम क्यो न वापस चलें। इस स्थान की वीरानी मुझे भयभीत कर रही है। श्वेत बादलो और नंगे वृक्षो का दृश्य मुझे दुखी कर रहा है।"

"धैर्य से काम ले। विस्मय ही अध्यात्म की पहली सीढी है।"

फिर मैंने अप्सरा की एक काल्पनिक मूर्ति देखी जो हमारे निकट आ रही थी। मैंने आश्चर्य से पूछा—

"यह कौन है ?"

"यह जुपीटर की लडकी और शोकपूर्ण कहानियो की हीरोइन है। इसका नाम मेलोबीन* है।

---

* प्राचीन यूनानियों के मतानुसार कला और ज्ञान के नौ देवता थे जिन्हें "म्यूज़" कहा करते थे। इनमें से हरएक अपने अनुयायियों को उसके प्रेम, जिज्ञासा, पात्रता और योग्यता के अनुसार कुछ न कुछ हिस्सा दिया करता था। इनके नाम ये है. (१)मेलोबीन—

"मनमोहक यौवन ! जब तू मेरे पहलू मे है तो गम मुझसे क्या माँगने आया है ?"

"गम इसलिये आया है कि तुझे धरती पर बसने वालो का गम दिखादे। जिसने गम नहीं देखा यह खुशी कहाँ देख सकता है ?"

अप्सरा की काल्पनिक मूर्ति ने अपना हाथ मेरी आँखो पर रखा। जब उसने अपना हाथ उठाया, मैंने स्वय को अपने यौवन से दूर और भौतिक दुनिया से अलग पाया। मैंने उससे पूछा—

"देवी ! यौवन कहाँ है ?"

उसने कोई उत्तर नही दिया और मुझे अपने परो पर बिठाकर एक ऊँचे पहाड की चोटी पर ले गई। वहाँ से मैंने धरती और पूरे ब्रह्माण्ड को अपनी आँखो के सामने एक किताब की तरह खुला हुआ देखा। उस पर रहने वालो के भेद किताब की लाइनो की तरह साफ दिखाई दे रहे थे। मैं अप्सरा की काल्पनिक मूर्ति के पास भयभीत खडा हुआ इंसान के गुप्त भेदो को ध्यान से देख रहा था और जीवन के रहस्य के सम्बन्ध मे प्रश्न कर रहा था।

मैंने क्या देखा ? काश, मैं वह दृश्य न देखता। मैंने देखा कि नेकी के फरिश्ते बदी के फरिश्तो से लड रहे हैं और इंसान आशा और निराशा के भँवर मे फँसा हुआ आश्चर्यचकित खडा है। मैंने देखा कि प्रेम और शत्रुता इंसान के दिल से खेल रहे है। प्रेम उसके पापो पर पर्दा डालने का प्रयत्न करता है। स्वीकृति और अनुमति के नशे मे उसको बेहोश करने की कोशिश करता है और उसकी जबान से प्रशंसात्मक शब्द निकालता है। शत्रुता उसे क्रोधित करती है। उसकी यथार्थ की आँखो को फोडने की कोशिश करती है। उसके

गमनाक कहानियों की देवी, (२)-बोलीना—शेरोसुरूर की देवी, (३) सालिया—हास्यप्रद काव्य की देवी, (४) काल्यूब—वीर काव्य की देवी, (५) अरातू—प्रेम काव्य की देवी, (६) तरसकोरी—नृत्य की देवी, (७) ओराइना—आकाश-विद्या की देवी, (८) कल्यू—इतिहास की देवी, और (९) ओतरबी—सगीत की देवी।

कानो मे ईर्ष्या और द्वेष की रूई ठूँसकर उसे सच्ची बात सुनने से रोकती है।

मैंने दैवज्ञो को देखा, कि लोमडी की तरह कपट का जाल बिछाकर इंसानी आत्माओ को उसमे फँसा रहे है—और इसान—वह ज्ञान और बुद्धि को पुकार-पुकारकर सहायता माँग रहा है। लेकिन बुद्धि उससे दूर-दूर भागती फिरती है। उसे प्रकोप की दृष्टि से घूरती है और कहती है कि जब मैंने हर स्थान पर, हर रास्ते मे पुकार-पुकारकर तुम्हे अपनी ओर बुलाया, उस समय तुम मेरे पास क्यो नही आये ?

मैंने दुनियापरस्त विरक्तो को देखा जिनकी निगाहे बार-बार आकाश की तरफ उठती हैं लेकिन उनके दिल लोलुपता की गहरी कब्रो मे घुसकर नये-नये जाल फैलाने की चिन्ता मे लगे हुए है। मैंने युवको को देखा जो केवल जबान से अपना प्रेम प्रकट करने मे व्यस्त थे और अपनी गलत आशाओ के आलीशान महल निर्माण कर रहे थे लेकिन खुदा का साया उनके सरो पर नही था। और उनकी भावनाये सोई पडी थी। मैंने धर्मोपदेशको और वक्ताओ को देखा जो छल और कपट का जाल बिछाकर अपनी भाषण-शक्ति के जोर पर अपने व्यापार का बाज़ार गर्म कर रहे थे और चिकित्सको को देखा जो सीधे-सादे और नेक लोगो की जानो से खेल रहे थे।

गरीब किसानो को देखा जो धरती पर हल चलाते है और बीज बोते है और धनवान वही खेती काटकर खा लेते है। अत्याचार खडा यह तमाशा देख रहा है और लोग इस अत्याचार को कानून का नाम देकर उसे उचित सिद्ध करते है। अधकार के पर्दे बुद्धियो पर लगातार पड रहे है और रक्षक—बुद्धि का प्रकाश अचेत पडा सो रहा है। कोमलागनियो को इस तरह पाया जैसे किसी अनजान व्यक्ति के हाथ मे बरबत हो और उससे बेसुरे राग निकलते हो। मैने नैसर्गिक स्वतन्त्रता को सडको और लोगो के दरवाजो पर अकेले फिरते हुए और शरण माँगते हुए देखा लेकिन किसी ने उसे शरण न दी। और उसी

समय असीम अपयश को देखा जिसके पीछे लोगो की भीड़ है—और उसे "आजादी" का नाम देते फिरते हैं । मैंने देखा कि धर्म, पवित्र ग्रंथ की तरह बन्द विस्मृति के आले पर पडा है और उसके स्थान पर मिथ्या धारणाओ को धर्म का नाम दे दिया गया है ।

इसान को देखा कि संतोष को कायरता के वस्त्र पहनाते है। वीरता को मूर्खता और मेहरबानी को डर का नाम देते है। सम्पत्ति को अपव्ययी व्यक्ति के हाथो मे भोग-विलास का और कंजूस के हाथो मे लोगो की रोजी मारने का यंत्र पाया और किसी बुद्धिमान के हाथो मे दौलत का निशान तक नही देखा ।

मैंने ये हालात अपनी आँखो से देखे और इस दृश्य को देखकर व्याकुल हो उठा ।

"अय देवताओ की बेटी ! क्या यही वह धरती है ? क्या यही वह इंसान है ?"

उसने निहायत इत्मेनान के साथ कहा—

"यही यथार्थ का मार्ग है, जिसमे काँटे बिछे हुए है। यह इसान की छाया है, यह उसकी रात हैं। बहुत जल्द सुबह का प्रकाश फैलेगा ।"

फिर उसने अपना हाथ मेरी आँखो पर रखा और हाथ उठने के बाद मैंने देखा कि मै यौवन के साथ इत्मेनान से जा रहा हूँ और आशा की किरणे मुझे अपनी ओर बुला रही हैं ।

*** आज और कल

एक धनाढ्य व्यक्ति अपने बाग की ओर चला। दुख उसके पीछे-पीछे चला और रंज उसके सर पर छाया डाले, मँडराने लगा। जैसे मरे हुए पशु को खाने वाले पक्षी लाश पर मँडराते हैं। वह एक ऐसे तालाब के किनारे पहुँचा जिसके निर्माण मे इंसानी हाथो ने अपना कमाल दिखाया था। जिसके चारो ओर बहुमूल्य पत्थरो का चबूतरा बना हुआ था। वह तालाब के किनारे बैठकर कभी मूर्तियो के मुँह से तीव्रता के साथ निकलने वाली पानी की धारा को देखता और कभी अपने उस महल की तरफ दृष्टि उठाता जो इस सुन्दर बाग मे यों दिखाई दे रहा था जैसे किसी सुन्दर कुमारी के गुलाबी गाल पर काला तिल।

वह कल्पना की दुनिया मे अपनी स्मरण-शक्ति से दिल बहलाने लगा। वह भूत की किताब मे घटनाओं के पन्ने पलटने लगा। आँसू उसकी आँखो मे डबडबाने लगे। उसके चारो ओर बिखरे हुए इंसानी कमालात उसकी आँखो मे चुभ गये। उसके दिल मे बीते हुए दिनों की याद ताजा हो गई और बेधड़क स्वयं से कहने लगा—

"कल मैं इन हरे-भरे टीलो पर भेड़ें चराया करता था और आनन्द का जीवन व्यतीत कर रहा था और आज लोलुपता का गुलाम हूँ। धन और दौलत मुझे अपने पीछे खींच रही है और मैं दीन और दुनिया से बेखबर पड़ा हूँ। और इसी बेखबरी मे दुर्भाग्य की गहराइयों

मे उतरता जा रहा हूँ। मै पक्षियो की तरह स्वतन्त्रता के गीत गाने मे मग्न था। मैं कल तक इसी स्थान पर प्रात. समीर की तरह कोमल और ठण्डी घास पर धीरे-धीरे कदम रखता हुआ आजादी से फिरा करता था। और अब इसानी टुकडी और उसके कानुन का कैदी बनकर रह गया हूँ। मैं हमेशा यही चाहता था कि जीवन की सारी खुशियाँ अपने लिये समेट लूँ। लेकिन आज मैं देखता हूँ कि धन-दौलत के इशारो पर चलते हुए मै दुख भरे कंटक-मार्ग पर चल रहा हूँ। मेरी दशा उस ऊँटनी के समान है जो सोने के बोझ से नीचे दबी जा रही हो और सोना उसकी जान ले रहा हो।

कहाँ है वह खुले मैदान? वह मद भरे गीतो से गूँजते हुए बाजार, वह स्वच्छ हवा, निर्मल हृदय? और कहाँ गई वह मेरी खुदा-परस्ती? ये सब सुख और शान्ति प्रदान करने वाली वस्तुएँ मैंने खो दी। मेरे पास 'सोना' बाकी रह गया है जिससे मैं प्रेम करता हूँ तो वह मुझ पर हँसती है। गुलाम रह गये जिनकी अधिकता ने मेरी खुशियाँ कम करदी। शानदार महल बाकी रहा जिसकी ऊँचाई ने मेरे दिल की दुनिया बरबाद करदी। एक वह जमाना था कि मैं गाँव की किसी लडकी के साथ अकेला घूमा करता था। सयम और प्रेम हमारे साथी होते, चाँद हमे प्रतिद्वन्दी की दृष्टि से घूरता।—और आज—मैं उन औरतो के झुरमुट मे फँस गया हूँ जो अकडकर चलती है। आँखो से चारो तरफ हर छोटे-बडे को इशारे करती है। सोने की शृंखलाओ मे मीठी-मीठी बातो से कृत्रिम तौर पर सुन्दर बनने का प्रयत्न करती है। मिलन की घडियाँ सोने के बने हुए आभूषणो और अँगूठियो के बदले बेचती फिरती है।

या वे दिन थे कि मैं अपने साथियो से मिलकर जगल के आजाद हिरनो की तरह घने वृक्षो मे भागता फिरता, उनके सुर से सुर मिलाकर गाता, हरे-भरे खेतो के आनन्द मे उनका बराबर का हिस्सेदार बनता—

और आज—अपनी टुकडो मे ऐसा मालूम होता हूँ जैसे हिरनो के समूह मे एक भेड। मैं रास्ते मे चलता हूँ तो मुझे दुश्मन की निगाह देखा जाता है और ईर्ष्या से मुझ पर उँगलियाँ उठाई जाती है। यदि सैर के लिये चमन की तरफ निकलता हूँ तो भयानक चेहरो और घमण्ड से अकडी हुई गर्दनो के सिवा किसी पर दृष्टि नही पडती। कल मुझे जीवन और जीवन के सौन्दर्य से मालामाल कर दिया गया लेकिन आज वे दोनों मुझसे छीन लिये गये। कल मैं अपने सौभाग्य के कारण समृद्ध था और आज धनवान होते हुए भी गरीब हूँ। कल मैं अपनी भेडो पर एक दयालु सम्राट की तरह शासन करता था। लेकिन आज—अपनी दौलत के सामने अत्याचारी मालिक का पीडित गुलाम बनकर रह गया हूँ—मैंने कभी कल्पना भी नही की थी कि धन मेरे दिल की आँखो पर पर्दे डाल देगा और मुझे मूर्खता के खड्डो मे धकेल देगा। मैं नही जानता था कि लोग जिसकी इज़्ज़त करते हैं वह नरक की वादी है। आह मेरे गुज़रे हुए ज़माने!"

सरमायादार अपनी जगह से उठ खडा हुआ। धीरे-धीरे कदम उठाता हुए अपने घर की ओर चलने लगा। वह ठण्डी आहें भर रहा था और उसके मुँह से ये शब्द निकल रहे थे—

"···क्या इसी का नाम दौलत है? यही वह खुदा है जिसकी मै आराधना करने लगा हूँ? यही वह वस्तु है जिसे हम अपनी जिन्दगी के वदले खरीदते है। लेकिन असली जिन्दगी का एक क्षण भी इससे नही खरीदा जा सकता। कौन है जो मेरे दौलत के ढेर लेकर मुझे एक सुन्दर कल्पना प्रदान करे? कौन है जो मुट्ठियाँ भर-भर मुझ से हीरे और जवाहरात ले और मुझे थोडी देर सच्चे प्रेम का आनन्द लेने दे? कौन है जो मेरे माल और दौलत के सारे खजाने लेकर वह आँखे दे जो असली सौन्दर्य को देख सके?"

ज्यो ही वह अपने मकान के दरवाजे पर पहुँचा उसने शहर की

तरफ इस तरह देखा जैसे अर्मिया यरूशलम को देखा करता था। फिर उसकी तरफ संकेत करके अपने आप से बाते करने लगा मानो वह शहर के मरने पर शोक-काव्य पढ रहा हो—

"ओ अधकार मे भटकने वाले, मौत की छाया मे पड़े हुए, झूठ पर न्याय करने वाले और मूर्खता से भरी हुई बाते करने वाले लोगो! कब तक फलो और कलियो को नरक मे फेकते रहोगे? कब तक काँटे और सूखे पत्ते खाते रहोगे? कब तक जिन्दगी के उद्यान छोडकर वीरानों और डरावनी इमारतो मे पडे रहोगे? रेशम के कोमल और मुलायम कपडे तुम्हारे ही लिये बनाये गये हैं; क्यो मोटे और पुराने कपडे पहनते हो? लोगो! बुद्धि का चिराग बुझने लगा है, खुदा के लिये इसमे तेल डालो। जागो, चोर तुम्हारे सुख और शान्ति के खजाने लूट रहे हैं।"

इसी समय एक गरीब भिखारी ने उसके सामने हाथ फैलाया। उसके गतिमान होट रुक गये। उसके चेहरे पर प्रसन्नता के लक्षण प्रकट हुए और उसकी आँखो से कोमल प्रकाश की किरणे निकलकर भिखारी के चेहरे पर पडने लगी। कल की वह स्थिति जिसकी याद मे वह आँसू बहा चुका था, उसकी आँखो मे फिरने लगी। वह भिखारी के पास गया। उसके माथे पर प्रेम और समता का चुम्बन दिया और उसका हाथ सोने से भर दिया और प्यार भरी आवाज़ से कहने लगा—

"भाई! इस समय इतनी ही ले लो और कल अपने साथियो को लेकर आओ और अपनी सारी दौलत सँभाल लो।"

भिखारी मुस्कराने लगा, जैसे वर्षा के बाद कली मुस्कराती है और जल्दी-जल्दी कदम उठाता हुआ वापस चला गया।

अब दयालु धनी यह कहते हुए अपने मकान मे दाखिल हुआ कि ज़िन्दगी मे हर चीज़ अच्छी है। यहाँ तक कि दौलत भी। दौलत

ईंसान को शिक्षा देती है। दौलत सारगी की तरह है। जो उसको बजाना नही जानता उसके कानो मे वह वेसुरे और अरुचिकर राग गाती है। माल प्रेम की तरह है। जो उसे खर्च नही करता उसे वह मौत के दरवाज़े तक पहुँचाता है। और जो उसे प्राप्त करने के बाद दाता बनता है उसे वह शाश्वत जीवन से मालामाल कर देता है।

★★★ ग़रीब विधवा

लिबनान के उत्तरी पहाडो मे वादिये कादेशा के श्वेत बर्फ से ढके हुए गाँव पर रात की काली चादर दिन के प्रकाश को ढकने लगी। बर्फ के कारण वादी के खेत सफेद कागज के पन्ने के तरह दिखाई दे रहे थे। हवाये उन पर रेखाएँ खीचती और मिटाती जाती थी। प्रचण्ड आँधियाँ उनके साथ खेल रही थी।

इसान अपनी-अपनी झोपडियो मे और पशु-पक्षी अपनी विश्राम-गाहो मे छुप गये थे। आकाश के खुले वातावरण मे कोई प्राणी दिखाई न देता था। स्तब्ध कर देने वाली सर्दी, शिथिल करने वाली हवाओ, भयानक रात के अंधकार और दिल दहला देने वाली मौत के सिवा कोई चीज दिखाई न देती थी।

एक छोटे से घर मे, आग के पास बैठी हुई एक औरत ऊन कातने मे व्यस्त थी। पहलू मे उसका इकलौता लडका बैठा था जो कभी आग के गर्म शोलो की ओर और कभी अपनी दयालु माँ की ओर नज़रे उठाकर देख लेता था। अचानक तेज़ हवा चलनी शुरू हुई। कमज़ोर दीवारें हिलने लगी। लडका घबराकर माँ से चिमट गया और आँधी के भयकर हमलो से अपने आप को छुपाने लगा। माँ ने उसे अपने सीने से लगाकर उसका चुम्बन लिया और फिर उसे अपनी रान पर बिठाकर उससे रहने लगी—

"मेरे लाल! घबराने की कोई बात नही। यह प्रकृति अपनी महानता प्रकट करके इसान को बताना चाहती है कि तू कुछ भी

नही। अपनी शक्ति का प्रदर्शन करके उसको बताना चाहती है कि तू कितना दुर्बल है। डर नही! धरती पर लगातार बरसने वाली बर्फ, आकाश मे छा जाने वाले बादलो और तबाही व बरबादी फैलाने वाली प्रचण्ड आँधियो के पीछे एक ऐसी शक्ति भी है जो लहलहाते हुए खेतो और हरी-भरी वादियो की आवश्यकताओ को अच्छी तरह जानती है। इन सब विनाशकारी हालात को देखने वाली एक ऐसी आँख भी है जो इंसान की विवशता पर कृपा और दया की दृष्टि डालती है।

"मेरे दिल के टुकडे! डरो नही। इसलिये कि तत्त्वो का स्वभाव जो वसन्त मे मुस्कराता रहा, गर्मी मे कहकहे लगाकर हँसता रहा, पतझड मे रोनी सूरत बनाकर प्रकट होता रहा, अब चाहता है कि फूट-फूटकर रोये और धरती की गहराइयो मे बसने वाली जिन्दगी के बीज को अपने ठण्डे आँसुओ से तृप्त करदे। कल जब तुम अपनी मीठी नीद से सजग होगे तो देखोगे कि आकाश साफ है और खेत बर्फ के श्वेत कपडे पहने हुए है, जिस तरह आत्मा इसानी जीवन और मृत्यु के सघर्ष के बाद उजले सफेद कपडे पहन लेती है।

"मेरे इकलौते बेटे! सोजा, तेरा बाप शाश्वत जीवन के हरे-भरे मैदानो से हमे देख रहा है। उन हमेशा की मीठी नीद सोने वालो की याद से, हमारे दिलो को हिला देने वाली आँधियाँ कितनी अच्छी लगती है। मेरे प्यारे बच्चे! सोजा, इसलिये कि इन्ही तीव्र और प्रचण्ड हवाओ के कारण वसन्त मे विभिन्न प्रकार के फूल खिलेंगे। और इन्ही की बदौलत तुम विभिन्न प्रकार के फल, वृक्षो पर से तोड-तोडकर लाओगे। इसी प्रकार, मेरे बेटे, इसान भी दर्दनाक कष्ट, असह्य विपत्तियाँ और जानलेवा निराशा के बिना प्रेम का फल प्राप्त करने के योग्य नही हो सकता।

"मेरे नन्हे बच्चे! सोजा, तू नीद मे अच्छे-अच्छे स्वप्न देखेगा और उस समय तू डरावनी रात और कडाके की सर्दी से बेखबर

होगा।"

नीद के नशे से लाल आँखे उठाकर उसने माँ की तरफ देखा और कहा—

"माँ ! नीद से मेरी आँखें भर गई है। मुझे डर है कि कही नमाज पढे बिना ही न सो जाऊँ।"

माँ ने उसे गोद मे ले लिया और डबडबाई हुई आँखो से उसके चेहरे की तरफ देखते हुए बोली—

"मेरे बेटे ! मेरे साथ बोलता जा। अय ससार के पालनहार ! गरीबो पर दया कर और इस सख्त सर्दी से उनकी रक्षा कर। अपने हाथो से उनके नंगे शरीरो को ढँक दे। उन अनाथो का ध्यान रख जो कच्ची झोपडियो मे सोये हुए है और उनके शरीर बर्फ से बातें कर रहे हैं। अय खुदा उन निस्सहाय औरतो की आवाज़ सुन जो नीले आकाश के नीचे मौत के पजो मे है और सर्दी के थपेड़ो का सामना कर रही है ! अय परमात्मा ! अपनी दया से धनवानो के हृदय के पट खोल दे। उनकी आँखो को बुद्धि की ज्योति से प्रकाशित करदे ताकि वे भूखो के फाको को अनुभव न कर सके। अय धरती और आकाश पर बसने वाले प्राणियो के अन्नदाता ! उन भूखो पर दया कर जो इस अँधेरी रात मे लोगो के दरवाजो पर दस्तक देते फिरते है। गरीबो की दरिद्रता को दया की दृष्टि से देख। अय दयालु भगवन् ! दुर्बल चिडियो को भी अपने रक्षरण मे रख और प्रचण्ड आँधियो की लपेट मे आये भयभीत वृक्षो का भी ध्यान रख। खुदा या हमारी यह दुआ कबूल कर।"

जब बच्चा मीठी नीद का आनन्द लेने लगा तो माँ ने उसे अपने बिस्तर पर लिटाकर तडपते हुए होटो से उसके माथे का चुम्बन लिया और फिर आग के पास बैठकर ऊन कातने मे लग गई।

*** एक सच्चे मित्र की घटना

मैंने उसको जीवन के रास्तो मे भटका हुआ राही देखा। यौवन के नशे मे चूर पाया। वह अपनी उमीदो मे मौत के किनारे तक पहुँच गया था। वह एक ऐसी नम्र और मृदुल डाली की तरह था जिसको हवा के तेज़ झोको ने चारो ओर से घेर लिया हो।

मैंने उसे उस गाँव मे पहचाना जहाँ वह हर वक्त अकडा रहता। चिडियो के कमजोर घोसलो को नष्ट करके उनके बच्चो को मारने मे उसको आनन्द आता। नन्ही-नन्ही कलियो को पैरों तले रौंदने और उनके सौंदर्य को मिट्टी मे मिलाने मे उसे मजा आता।

फिर मैंने उसे स्कूल मे देखा। वह पढने-लिखने के बजाय खेल-कूद मे व्यस्त रहता और एक क्षण शान्ति से न गुज़ारता। फिर मैंने उसे शहर मे एक ऐसे युवक के रूप मे देखा जो अपनी पैतृक सज्जनता को बाजारो मे बेचता फिरता था। अपना धन निर्लज्जता के रास्तो मे निस्संकोच बरबाद कर रहा था और अपनी बुद्धि को मदिरा की भेट चढा रहा था।

इन सब दोषो और बुराइयो के बावजूद मुझे उससे मुहब्बत थी। ऐसी मुहब्बत जिसमे दुख और दया मिली हुई थी। मुझे उससे इसलिये मुहब्बत थी कि उसकी ये बुरी आदतें प्रकृति की देन नही थी बल्कि उसकी कमजोर और निराश आत्मा की दी हुई थी।

लोगो! इसानी प्रकृति बुद्धि के कामो से जबरदस्ती पथ-भ्रष्ट होती है और फिर स्वय ही उसकी ओर लौटती है। यौवन की

प्रचण्ड हवाओ मे धूल और बारीक रेत के दिखाई न देने वाले छोटे-छोटे कण सम्मिलित होते हैं जो बुद्धि की पलको मे गिरकर उसे अधा कर देते है और अवसर एक लम्बे समय तक उसे अधा ही रखते हैं।

मुझे इस युवक से मुहब्बत थी। मेरे दिल मे उसके लिए निष्ठा के भाव थे और यह केवल इसलिये कि मैं उसके अत करण के कबूतर को उसके बुरे कर्मों के गिद्ध से लडते हुए देख रहा था। और यह कबूतर अपनी दुर्बलता से नही बल्कि दुश्मन की शक्ति से प्रभावित हो गया था। उसका पवित्र अतःकरण एक न्यायी परन्तु कमजोर काजी की तरह था जो अपनी कमजोरी के कारण अपनी आज्ञाएँ मनवाने मे विवश हो।

मैने कहा कि मुझे उससे मुहब्बत थी। मुहब्बत विभिन्न रूप बदल-कर आती है। कभी बुद्धिमानी के रूप मे, कभी न्याय के रूप मे और कभी आशा के रूप मे। मेरी मुहब्बत उस आशा के रूप मे थी कि मैं उसके प्राकृतिक सूरज के प्रकाश से उसका यह अस्थायी अधकार दूर कर दूँ लेकिन इसके बावजूद मै नही समझ सका कि यह अस्थायी मैल-कुचैल कब और किस तरह उसके दिल से दूर होगा। उसकी यह निष्ठुरता कब सुशीलता मे पर्वितित होगी और उसकी मूर्खता कब बुद्धिमानी का रूप धारण करेगी। इसान को इस कैद से आजाद होने से पहले यह खबर ही नही होती कि वह इन बन्धनो से कब छुटकारा पायेगा। सुबह का प्रकाश फैलने से पूर्व उसे यह ज्ञान ही नही होता कि कलियाँ कैसे मुस्कराती है?

जमाना गुजरता गया और उस नवयुवक की याद मेरे दिल मे काँटे की तरह चुभती रही। उसका नाम लेते ही मै बराबर ऐसी ठण्डी आहे भरने लग जाता था जो मेरे दिल को घायल कर देती थी। कल मेरे पास उसका पत्र आया है, जिसमें वह लिखता है—

"मेरे दोस्त! मेरे पास आओ। मैं चाहता हूँ कि तुझे एक

ऐसे नवयुवक से मिलाऊँ जिससे मिलकर तू खुश होगा और जिसे जानकर तुझे हद से ज्यादा प्रसन्नता होगी ।"

खत पढकर मैं कहने लगा कि अफसोस, अब यह नवयुवक चाहता है कि अपनी याद के साथ, जो मुझे हमेशा दुखी रखती है, किसी और की याद भी मिलादे। क्या वह अकेला दुराचारिता और अनियमितता का उदाहरण देने के लिये काफी नही था। क्या अब वह चाहता है कि अपने साथ एक और को मिला मुझे पूर्ण रूप से भौतिक बन्धनो मे जकड दे।

फिर कुछ सोचकर मैने कहा—चलो मिल ले ! आखिर आत्मा प्रियजनो से मिलकर ही तो प्रसन्न होती है और दिल उसकी मुहब्बत के प्रकाश ही के सहारे दुनिया के अधकार पर विजय प्राप्त करता है। जव रात का अधकार चारो ओर फैल गया तो मैं नवयुवक के घर की ओर चला। उसके कमरे मे पहुँचकर मैंने देखा कि नवयुवक विल्कुल अकेला बैठा पद्य की कोई किताव पढ रहा है। उसके हाथ मे किताव देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। थोडी देर के वाद मैंने पूछा—"तुम्हारा नया साथी कहाँ है ?"

उसने कहा—"दोस्त, वह मै ही हूँ।" फिर वह गम्भीरता के साथ वैठकर मेरी ओर देखने लगा। उसकी आँखो मे ऐसा प्रकाश था जो दिल को घायल और देह को शिथिल कर रहा था। वह आँखे जिन्हे मैंने अनेक वार ध्यान से देखा और जिन मे क्रोध और कठोरता के सिवा कोई भाव नही पाया, अब ऐसी आँखो मे परिवर्तित हो चुकी थी जिनकी ज्योति देखने वालो का दिल अपनी तरफ खीच लेती है।

फिर वह ऐसी मधुर आवाज से, जो उसकी आवाज नही मालूम होती थी, कहने लगा—"वह व्यक्ति जिसको तूने वचपन मे पहचाना, स्कूल के जमाने मे जिसका साथ दिया और जवानी मे जिसके साथ-साथ फिरता रहा, वह अब मर गया। उसकी मौत मेरे अस्तित्व का कारण

बनी। मै तुम्हारा बिल्कुल नया दोस्त हूँ। लाओ, दोस्ती का हाथ मेरी ओर बढाओ!"

मैंने उसके कहने पर उसका हाथ अपने हाथ मे ले लिया और मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे उसमे बिजली का करण्ट है जो मेरे सारे शरीर मे दौड गया। उस हाथ का खुरदरापन अब नम्रता मे बदल गया था। वह उँगलियाँ जो कल तक अपने कुकर्मो के कारण चीते के पंजे से उपमा देने योग्य थी अब अपनी कोमलता से दिल के कोनो को टटोल रही थी। फिर मैने बडे आश्चर्य से पूछा—

"तू कौन है ? तू कहाँ-कहाँ और कैसे-कैसे फिरता रहा ? क्या किसी पवित्र आत्मा ने तेरी आराधना करके तुझे इस स्थान पर पहुँचाया है या मै कोई स्वप्न देख रहा हूँ ?"

उसने कहा—"हाँ, आत्मा की पवित्रता की छाया मुझ पर पडी और मेरी दशा बदल गई। प्रेम की तीव्र भावना ने मेरे दिल को एक पवित्र बलिवेदी मे परिवर्तित कर दिया। मेरी दशा को बदल देने वाली हस्ती एक औरत है—उस औरत ने, जिसको मै कल तक मर्द का खिलौना समझ रहा था, मुझे नरक की यातनाओ से निकालकर स्वर्ग के दरवाजे पर न केवल खडा कर दिया बल्कि उसके दरवाज़े खोलकर मुझे अन्दर ले आई।

"वह यथार्थ को परखने वाली औरत ही है, जिसने मेरे दिल मे अपने प्रेम का बीज बोया और फिर मेरी तरफ आगे बढी। वही औरत —जिसकी दूसरी बहनो को मैंने अपनी मूर्खता के कारण घृणा की दृष्टि से देखा—मुझे प्रतिष्ठा और सम्मान के आकाश पर पहुँचा गई। वही औरत—जिसकी सहेलियो को मैंने अपने अज्ञान के कारण बुरी नज़रो से देखा, मुझे अपनी मेहरबानियो से सच्चरित्र बना गई। उसी औरत ने, जिसकी बहनो को मैंने सोने और चाँदी के दाम मे फँसाकर अपना गुलाम बनाया—अपने सौन्दर्य से मुझे आज़ाद कर दिया।—

और वही औरत जिसने पहले आदम को उसकी दुर्बलता और अपनी इरादे की शक्ति से जन्नत से निकाला, मुझे अपनी आराधना और अनुकम्पा से दुबारा उसी जन्नत मे ले आई।"

इस समय मैंने नज़रे उठाकर उसकी तरफ देखा। उसकी आँखो मे आँसू डबडबा रहे थे, उसके होटो पर मुस्कराहट खेल रही थी। और प्रेम की ज्योति की किरणे उसके सिर पर ताज की तरह फैली हुई थी। मैं उसके पास गया और ईसाई पादरी की तरह, जो प्रसाद के लिये बलिवेदी की धरती को चूमता है, उसके ललाट पर चुम्बन दिया और उससे आज्ञा लेकर वापस लौटा। उसके शब्द बार-बार मेरे कानो मे गूँज रहे थे—

"वही औरत—जिसने पहले आदम को उसकी दुर्बलता और अपने इरादे की शक्ति से जन्नत से निकाला—मुझे अपनी आराधना और अनुकम्पा से दुबारा उसी जन्नत मे ले आई।"

*** ग़रीब दोस्तों के नाम

अय ! दुर्भाग्य के बिस्तर पर तू पैदा हुआ। तिरस्कार के वातावरण मे तू पला-बढा। अत्याचार के माहौल मे तू जवान हुआ। केवल तू ही है जो सूखी रोटी, ठण्डी आहे भर-भरकर खाता है और मैले पानी मे अपने आँसू मिला-मिलाकर पीता है।

और अय नृशसित फौजी सिपाही ! तू अत्याचारी इंसानो के हुक्म पर अपनी अर्धांगिनी और अपने मासूम बच्चो और प्रिय साथियो को छोडकर केवल इसलिये मौत के मैदान मे जाता है कि तुझे वह इनाम मिले जिसको ये इंसान तंख्वाह कहते है।

और अय शाइर ! तू अपने ही देश मे मुसाफिर की तरह रहता है। अपनी जान-पहचान के लोगो मे अजनबी दिखाई देता है और दुनिया के भोग-विलास मे से सिर्फ दो रोटी पर सन्तोष करता है।

और अय जेल की अँधेरी कोठरी मे बन्द कैदी ! तू दुनिया के घमण्डी इसानो के अत्याचारो से मजबूर होकर एक साधारण सा अपराध कर बैठा और फिर इन्ही घमण्डी इसानो ने जो गरीब के अच्छे कामो को भी बुरी निगाह से देखने के आदी हैं, तुझे प्रकोप की दृष्टि से देखा।

और अय बिचारी भिखारिन ! कि जिसे खुदा ने सौन्दर्य की दौलत से मालामाल किया। सरमायादार नवयुवक की दृष्टि ने उसे ताडा। तेरी दरिद्रता से लाभ उठाकर चमकते हुए सोने के चन्द टुकडो से तुम्हे धोखा दिया। और जब वह अपने बुरे इरादो मे सफल हो गया तो तुझे

तिरस्कार और दुर्भाग्य के गहरे खड्डे मे धकेलकर तुझ से आँखे फेर ली।

अय मेरे विवश साथियो! तुम सब इसानी कानून द्वारा कत्ल किए गये हो। तुम सब अशुभ समझे जाते हो और तुम्हारे अशुभ होने का कारण निरंकुश शक्तियो का घमण्ड, शासक की निर्दयता, सरमायादार का अत्याचार और भोग-विलास के गुलाम इंसान का घमण्ड ही है।

उम्मीद का दामन पकडे रहो। निराशा को अपने पास भी न फटकने दो। इसलिये कि ससार के अत्याचार, भौतिक दुनिया से दूर, बादलो के उस पार, नजरो से भी छुपी हुई, एक ऐसी शक्ति मौजूद है जो नितात न्याय है, नितात दया है और नितात प्रेम है।

तुम उन कलियो की तरह हो जो छाया मे फूट निकली। बहुत जल्द ठण्डा प्रात: समीर चलेगा और सूरज की किरणे तुम पर पडेंगी और फिर तुम एक नई जिन्दगी—सुख-शान्ति—आनन्द और सन्तोष की जिन्दगी पाओगे।

तुम बर्फ के बोझ से लदे हुए बिन पत्तो के वृक्ष हो। शीघ्र ही वसन्त अठखेलियाँ करता हुआ आयेगा और तुम्हे हरे-भरे सुन्दर पत्तो के वस्त्र पहनाकर दुनिया के सामने पेश कर देगा।

वह दिन दूर नही जब यथार्थ का प्रकाश तुम्हारी आँखो से आँसुओ के वे पर्दे हटा देगा जो तुम्हारी मुस्कराहट पर पडे हुए हैं।

मेरे गरीब भाइयो! मेरे दिल मे तुम्हारी इज्जत है और तुम्हे दुख पहुँचाने वालो के लिये घृणा के भाव ठाठे मार रहे हैं।

मैं सूरज निकलने से कुछ देर पहले, सुबह के सुहाने वक्त मे टहलते हुए चमन की सैर को निकला और वहाँ बैठकर अपने दिल से कानाफूसी करने लगा। मौसम सुहाना था। चमन की ठण्डी घास तबीअत मे नशा पैदा कर रही थी, और मैं उस वक्त जबकि दुनिया के बसने

वाले इंसान अपने बिस्तरों पर अर्ध-निद्रा की अवस्था मे करवटें बदल रहे थे, मैं हरी और कोमल घास पर तकिया लगाये अपने दिल से प्राकृतिक सौन्दर्य के बारे मे कुछ मालूम कर रहा था और यथार्थ की बाते जो मुझ पर प्रकट हो गई थी, उसे बता रहा था।

विचारो की धारा पर बहती हुई जब मेरी कल्पना मुझे इसानो से दूर ले गई और मेरे अनुध्यान ने भौतिक दुनिया का पर्दा हटाकर मेरा वास्तविकरूप मुझे दिखाया तो मुझे अनुभव होने लगा कि मेरी आत्मा मुझे प्रकृति के निकट ला रही है और उसके भेद मुझ पर प्रकट होने लगे हैं।

ऐसी दशा मे मैंने देखा कि प्रात. समीर निराश अनाथ की तरह ठण्डी आहे भरता हुआ, डालियो पर से गुज़र रहा है। मैंने उससे पूछा—"प्रात समीर ! तू इतनी सर्द आहे क्यो भर रहा है ?" उसने उत्तर दिया—"इसलिये कि सूरज की गर्मी मुझे धकेलकर शहर के वातावरण की ओर भेज रही है। उस वातावरण की तरफ जहाँ मेरे स्वच्छ वस्त्रो को विभिन्न बीमारियो के कीटाणु चिमट जायेंगे। उस वातावरण की तरफ जहाँ इंसानो के मुँह से निकली हुई जहरीली हवाएँ चलती हैं।

फिर मैंने अधखिली कलियो की तरफ देखा। उनकी आँखो से आँसुओ की बूँदे पानी के सफेद कतरो के रूप मे जारी थी। मैंने उनसे सवाल किया—"प्रकृति की गोद मे खिलने वाली सुन्दर कलियो ! इस समय यह रोना कैसा ?"

उनमे से एक ने अपनी सुराहीदार गर्दन उठाकर कहा—"हम रोते हैं, इसलिये कि वह समय आ गया है जब इंसान आकर अपने ज़ालिम पजे से हमारी ये सुराहीदार गर्दनें तोड़ देगा। आज़ाद होते हुए भी हमे शहर के बाज़ारो में गुलामों की तरह बेचेगा और शाम के समय जब हमारी यह ताज़गी ख़त्म हो जायेगी, हम मुर्झा जायेंगी तो

कचरे के ढेर मे हमे फेंक देगा। हम क्यो न आँसू बहाये ? जबकि हम अपनी आँखो से देख रहे है कि कठोर दिल इसान के अत्याचारी हाथ हमे बहुत जल्द अपने देश से दूर फेंकने वाले है।"

थोडी देर मे नदी की आवाज़ कानो मे पडी जो उस औरत की तरह रो रही थी, जिसका बच्चा गुम हो गया हो। मैंने उससे पूछा—"नदी ! तू क्यो चीखें मार-मारकर रो रही है ?" उसने उत्तर दिया—"मैं अपने स्वभाव के विरुद्ध उस शहर की तरफ जा रही हूँ, जहाँ इसान मेरा अपमान करेगे। अगूर से खीची हुई शराब पियेगे और मेरा पानी अपनी देह का मैल-कुचैल दूर करने के काम मे लायेगे। मैं क्यो न रोऊँ जबकि मैं देख रही हूँ कि बहुत जल्द मेरा यह स्वच्छ और निर्मल जल शहर की गन्दगी से मैला और अपवित्र हो जायेगा।"

फिर मैंने सुना कि पक्षी शोक-गीत गाने मे व्यस्त है। मैंने उनसे पूछा—"सौभाग्यशाली पक्षियो ! तुम किसके गम मे दर्द भरे गीत गा रहे हो ?" एक चिडिया मेरे पास ही वृक्ष की एक टहनी पर आकर बैठी और कहने लगी—"इसान अभी एक यन्त्र लेकर आयेगा और हमारे प्राण लेने की कोशिश करेगा। हम नही जानते कि हम मे से कौन उसके अत्याचार का शिकार होगा। इसलिये हम एक दूसरे को आखरी सलाम कह रहे है। आखिर हम ऐसे गीत क्यो न गाये, जब हम जानते है कि जहाँ भी हम जाते हैं मौत हमारा पीछा करती है।"

पहाड की ओट से सूर्य उदय हुआ और वृक्षो की फुंगियो को सोने के मुकुट पहनाने लगा और मैं स्वय से पूछ रहा था कि आखिर प्रकृति जिस चीज़ को बनाती और पैदा करती है, इंसान उसे क्यो बिगाडता और नष्ट करता है ?

*** झोंपड़ी और महल

महल—

धनाढ्य व्यक्ति के आलीशान मकान के सुन्दर और सुसज्जित कमरे बिजली के प्रकाश से जगमगाने लगे। संध्या हुई नौकर मखमली वर्दियाँ पहनकर दरवाज़ो पर तनकर खड़े हो गये। उनके सीनो पर पीतल के पालिश किये हुए बटन चमक रहे थे और वे आने वाले महमानो के लिये आँखे बिछाये खड़े थे।

शरीफ मर्द और औरतें अभिमान से सर उठाये फख्र और गर्व के दामन घसीटते हुए सुनहरी वस्त्र पहने इस आलीशान महल की तरफ आना शुरू हुए। मोहक गीत और दिलो को गर्माने वाले संगीत की आवाजें दिल और दिमाग पर पर छाने लगी।

थोड़ी देर मे मर्दों ने खड़े होकर औरतो को अपनी ओर बुलाया। हर औरत अपनी-अपनी पसन्द के अनुसार एक-एक मर्द के साथ चिमट-कर नाचने लगी। यह शानदार मकान संगीत और नृत्य की रगीनियो के कारण उस हरे-भरे उद्यान की तरह नजर आने लगा जिसमे चारो ओर रगीन फूल सुन्दर पौदो की डालियो पर खिले हुए हो और जब प्रातः समीर नाचता और गाता हुआ वहाँ से गुजरे तो वे गुरूर और नाज़ से अठखेलियाँ करने लगे।

जब रात अपनी आधी यात्रा पूर्ण कर चुकी और शहर की आबादी पर श्मशान की सी नीरवता छा गई तो दस्तरख्वान बिछाया गया। इस

पर विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट भोजन और रंगबिरग के उत्तम फल चुन दिये गये। इससे निवृत होने के बाद शराब का दौर शुरू हुआ। सबने मिलकर इतनी पी कि उसके नशे मे धुत्त होकर दुनिया से बेसुध हो गये।

रात—इसी बेसुधी की दशा मे—गुज़र गई। प्रात काल का प्रकाश पूर्व की ओर से प्रकट होकर चारो ओर फैलने लगा और धनिको का यह समूह, अनिद्रा से थका हुआ, शराब के नशे मे उन्मत्त, नाचने और गाने से चूर-चूर एक-एक करके वहाँ से रवाना होने लगे और घर जाकर अपने-अपने कोमल बिस्तरो पर नीद की गोद मे जा सोये।

झोंपड़ी--

शाम हुई। एक गरीब किसान, फटे-पुराने वस्त्र पहने, एक टूटी-फूटी झोपड़ी के दरवाज़े पर आकर रुका। दरवाज़ा खटखटाया और पट खुलने पर मुस्कराता हुआ अन्दर गया और आग के निकट अपने बच्चो के पास बैठ गया। थोडी देर मे उसकी पतिव्रता स्त्री ने फटा-पुराना कपडा बिछाकर उस पर साधारण सा खाना परोस दिया। सबने मिलकर खाना खाया और फिर एक टिमटिमाते हुए चिराग के सामने बैठ गये।

रात का प्रारम्भिक हिस्सा गुजरने के बाद सब अपने-अपने बिस्तरो पर लेट गये और मीठी नीद ने उन्हे अपनी गोद मे सुला लिया।

रात गुज़र गई और प्रात काल का प्रकाश चारो ओर फैलने लगा। गरीब किसान अपने मालिक का नाम लेकर जाग उठा। उसने अपनी बीवी और बच्चो के साथ मिलकर बासी रोटी के चन्द कौर जल्दी-जल्दी खाये और कधे पर हल रखकर खेत को रवाना हुआ, ताकि अपने माथे के पसीने से उसे तरवतर करके अपनी मेहनत का फल उन धनिको के दस्तरख्वान पर चुनदे जिन्होने कल की रात शराब की बदमस्ती और नाच-गाने की रगीनियो मे व्यतीत की।

सूरज ने पहाड़ की ओट से अपना सर निकाला। उसकी किरणें किसान के पसीने से लतपत ललाट पर सीधी पडने लगी। उसका शरीर सूरज की गर्मी से तपने लगा। और वह धनिक अपने आलीशान, महलो मे, खस की टट्टियो और बिजली के पखो की ठण्डी हवा मे, दुनिया से बेखबर—उनका पेट भरने वाले किसान की अवस्था से बेसुध, अपने नरम बिस्तरो पर नीद की गोद मे खर्राटे भर रहे थे।

यह है इंसान की हालत और उसका न्याय। दुनिया के भोग-विलास मे डूबकर बदमस्त होने वाले तो बहुत है लेकिन समझने और सोचने वाला कोई नही।

*** अय मेरी भर्त्सना करने वाले !

अय मेरी भर्त्सना करने वाले ! मुझे अकेला रहने दे। तुझे उस मुहब्बत का वास्ता, जो तेरे मन को तेरी साथी की कल्पना पर मजबूर करती है। जो तेरे दिल को तेरी माँ की अनुकम्पा की याद दिलाती है। जो तेरे हृदय को तेरे बेटे की याद मे व्यस्त रखती है—कि मुझे मेरे हाल पर छोड दो।

मुझे मेरी हालत पर रहने दे। मेरे स्वप्नो की दुनिया बरबाद न कर। कल तक धैर्य रख। कल मेरे बारे मे जो फैसला करेगा वह मुझे मंजूर है।

मुझे विश्वास है कि तूने मेरे फायदे के लिये मुझे सीख दी। लेकिन मैं उसे मानने के लिये तैयार नही हूँ। इसलिये कि सीख एक काल्पनिक वस्तु है जो मन को व्याकुलता के मैदानो मे लिये फिरती है। जहाँ जिन्दगी मिट्टी की तरह निर्जीव है। मैं अपने सीने मे एक छोटा सा दिल रखता हूँ। मै चाहता हूँ कि सीने के अन्धकार से उसे बाहर निकालूँ, हथेली पर रखकर उसकी गहराइयो का अन्दाज़ा लगाऊँ और उसके भेद मालूम करूँ। अय मुझे कोसने वाले ! ख़ुदा के लिये अपनी तीर और नश्तर की तरह चुभने वाली बातो से डराकर उसे पसलियो के पिंजरे मे कैद न कर।

इसे छोड दे ताकि वह अपना ख़ून बाहर निकालकर दुनिया के सामने बहा दे। और प्रेम तथा सौंदर्य का सन्देश जो प्रकृति ने उसके पास आमानत के रूप मे रख छोड़ा है, लोगो तक पहुँचा दे।

सूरज निकल आया। फूलो के आसपास घूमकर बुलबुल मीठी बोलियाँ बोलने लगी। मैं भी चाहता हूँ कि अचेतना की नीद की चादर फेककर सफेद कबूतरो के साथ-साथ फिरूँ। मुझे बुरा कहने वाले ! मुझे न रोक। जंगल के शेरो और वादी के काँटो से मुझे न डरा। मेरा दिल उस वक्त तक भावी विपत्तियो से कभी नही डरता और न कष्ट से घबराता है जब तक कि वह आ न जाये।

भर्त्सना करने वाले ! मुझे छोड दे। अपने उपदेशो को बन्द करदे। दुनिया की विपत्तियो और आँसुओ की लगातार वर्षा ने मेरी आँखे खोल दी है।

मुझे तू क्यो रोक रहा है ? मुझे चलने दे। देख, मुहब्बत की सवारी आ रही है। सौन्दर्य अपने झण्डे उठाकर आगे बढ रहा है। यौवन खुशी का बैण्ड बजा रहा है। उनके मार्ग मे गुलाब और चमेली के फूल बिछा दिये गये है और हवा फूलो की भीनी-भीनी सुगन्ध से सुवासित हो रही है।

मुझे दौलत के किस्से और प्रतिष्ठा की कहानियाँ सुनने का शौक नही। मेरा दिल दौलत से नि स्पृह है और मेरे लिये प्रकृति की प्रतिष्ठा से बढकर कोई प्रतिष्ठा नजर नही आती।

मुझे राजनीति की बातो और राज्य की खबरो से वंचित रख। इसलिये कि पूरी दुनिया मेरा देश और सारे संसार के वासी मेरे देश-वासी है।

★★★ सरगोशियाँ

मेरी सुन्दर प्रेयसी ! तू कहाँ है ? क्या तू उस छोटे से उद्यान की सैर कर रही है, जिसकी कलियाँ तुझे इस तरह चाहती है जैसे दूधपीते बच्चे अपनी माँ को । या अपनी किताबो मे सलग्न होकर इसान को विज्ञान पढाने मे व्यस्त है इसलिये कि तू खुद प्रकृति के विज्ञान की बदौलत इन किताबो से बेपरवा है ।

मेरी जीवन-साथी ! क्या तू आराधनालय मे मेरे लिये दुआ माँगने मे व्यस्त है या खेतो मे अपने स्वभाव से बाते कर रही है जो तेरे सोते-जागते तेरे विचारो पर छाया रहता है ? या गरीबो की झोपडियो मे अपनी मीठी बातो से उन बिचारी औरतो की दिलजोई कर रही है जिनके दिल टूट गये हैं और आशाओ पर पानी फिर गया है ?

नही, नही, तू हर जगह है इसलिये कि तू खुदा की ज्योति से सीधे प्रकाश लेती है और तू हर समय है इसलिये कि तू जमाने से अधिक शक्तिशाली है।

क्या वे रातें तुझे याद हैं जिन्होने हमे आपस मे मिला दिया था ? जिनमे तेरे मन की किरणो ने हम दोनो को चाँद के हाले की तरह घेर लिया था और मुहब्बत के फरिश्ते रूहानी गीत गाकर हमारे आसपास घूम रहे थे ?

क्या तुझे वे दिन भी याद हैं जब हम दोनो बाग के वृक्षो की घनी छाँव मे बैठ जाया करते थे ? उनकी डालियाँ हमारे ऊपर झुकी ऐसी मालूम होती थी मानो हमे दुनिया वालो की आँखो से छुपाये रखना

चाहती हो। जैसे पसलियो की हड्डियाँ दिल के भेद किसी पर प्रकट नहीं होने देती।

क्या तुझे पहाड के दामन और हरी-भरी वादियो की वे राहे भी याद है जिन पर हम दोनो मिलकर चला करते थे ? तेरी कोमल और मृदुल उँगलियाँ मेरी उँगलियो मे यो गुँथी रहती थी जैसे तेरी चोटियाँ एक-दूसरी मे गुँथी हुई हो।

क्या तुझे वह घडी भी याद है जब मैं तुझ से बिदा होने के लिये तेरे पास आया ? तूने मुझे गले लगाया और मेरे होटो पर अपने होट रखकर एक लम्बा और मीठा चुम्बन लिया जिससे मुझ पर यह राज खुल गया कि चार होट आपस मे मिलकर ऐसे भेद बताने लगते है जिन तक जबान की पहुँच नही।—एक ऐसा चुम्बन जो एक लम्बी आह की भूमिका थी। वह आह जो उस साँस के समान थी जिसके असर ने मिट्टी के ढेर से इसान का पुतला बनाया। वह लम्बी आह जिसने हमे रूहो की पवित्र दुनिया मे पहुँचाया और हम पर अपना भेद खोलकर रख दिया। फिर तूने बार-बार मेरा चुम्बन लिया और आँसू बहाते हुए कहा—शरीर तो हेय स्वार्थ के पुतले हैं। वह दुनिया के हालात से प्रभावित होकर एक-दूसरे से दूर हटते है और कामुकता के कारण एक-दूसरे को अपनाते है—लेकिन आत्माएँ वे हमेशा-हमेशा मुहब्बत के कब्ज़े मे संतोष का साँस लेती है। यहाँ तक कि मौत आकर उन्हे खुदा के दरबार मे पहुँचा देती है। मेरे महबूब जा ! सुन्दर जीवन ने, जो इसकी बात मानने वालो को आनन्द के जाम भर-भरकर पिलाता है—मुझे अपनी तरफ बुलाया है। उसके पीछे चल। मेरा खयाल न कर ! तेरी मुहब्बत हमेशा मेरे पास रहती है और तेरी याद मुझे दुनिया के सुखो से बेपरवाह रखती है।

मेरी जीवन-साथी ! तू अब कहाँ है ? क्या तू रात की नीरवता मे उस प्रात. समीर की राह देखती है, जो मेरे दिल की धड़कने और छुपे हुए भेद लिये हुए तेरी तरफ आती है ? या तू अपने प्रेमी—मुझे—

अपनी कल्पना की दृष्टि से देखती रहती है ? लेकिन प्रिये ! अच्छी तरह जान ले कि मेरा चेहरा तेरे उस काल्पनिक प्रेमी के चेहरे की तरह नही रहा जो कल तक तेरे दर्शनो के कारण हमेशा फूल की तरह खिला रहता था—अब तेरे विछोह के दुख से उदास दिखाई देता है। वे पलके जो कल तक जगल की आजाद हिरनी की पलको की तरह सुरमगी दिखाई देती थी, अब रोते-रोते झड गई है। और वे दाँत जो तेरे चुम्बन का आनन्द ले-लेकर मोती की तरह चमकते थे, अब काले पड गये हैं।

मेरी प्यारी ! तू कहाँ है ? क्या सात समुद्र पार भी तू मेरे दिल की पुकार सुन सकती है ? मेरी कमज़ोरी और दुर्वलता देख सकती है ? मेरे धैर्य और सन्तोष का अनुमान लगा सकती है ? यदि नही तो क्यो ? क्या उडती हुई हवाये तुझे एक विवश और मजबूर परदेसी का सन्देश नही पहुँचाती ? क्या मेरे और तेरे दिल का वह रिश्ता भी टूट गया जो मेरे टूटे हुए दिल की फरियाद तुझ तक पहुँचाने का साधन बनता ?

अय मेरी जिन्दगी ! तू कहाँ है ? मेरा जीवन अधकारमय हो गया है। गम के बादल छा गये। खुदा के लिये हवा को देखकर मुस्करा और प्रातः समीर की ठण्डी आहो से भर दे।

तू कहाँ है ? प्यारी ! तू कहाँ है ?

अफसोस ! मुहब्बत ने मुझे कितना गिरा दिया ?

*** अपराधी

नवयुवक भिखारी सडक के किनारे बैठा है। एक नवयुवक—शक्ति-शाली शरीर वाला—भूख से तंग आकर रास्ते के मोड पर—राह चलते हुए लोगो के सामने—देने वालो को विभिन्न शब्दो मे दुआ देते हुए और अपनी भूख का दुखडा रोते हुए—हाथ पसारकर भीख माँग रहा है।

रात का अंधकार छाने लगा। भिखारी की ज़बान और उसके होंट आवाजे देते-देते सूख गये—लेकिन उसका हाथ—उसके पेट की तरह—अब भी खाली है। अब वह उठा। शहर के बाहर वृक्षो के झुरमुट मे अकेला बैठकर दहाडे मार-मारकर रोया। अपनी डबडबाती हुई आँखे आकाश की तरफ उठाईं और भूख द्वारा सिखाये हुए शब्दो मे उसे सम्बोधित करके कहने लगा—

"अय ख़ुदा! मैं मजदूरी की तलाश मे धनिक के द्वार पर गया। मेरे फटे-पुराने और मैले कपडे देखकर उसने मुझे दुतकार दिया। पढ़ने के लिये पाठशाला की ओर गया तो मुझे वहाँ घुसने भी न दिया गया। इसलिये कि मेरा हाथ खाली था। मैंने सिर्फ खाने पर नौकरी खोजी लेकिन दुर्भाग्य से वह भी न मिली। और अन्त मे तग आकर मैंने भीख माँगी तो दुनिया में बसने वाले निर्दयी प्राणियो ने कहा कि हट्टाकट्टा है—आलसी और निकम्मे आदमी पर उपकार करना पाप है। तेरे हुक्म से मैं पैदा हुआ और तेरे ही हुक्म से जीवित हूँ। फिर अय मेरे पालक! तेरे बन्दे मुझे तेरे नाम पर रोटी का टुकडा क्यो नही देते?"

नवयुवक भिखारी इतना कहकर रुक गया। उसके चेहरे का रंग बदल गया। वह उठ खडा हुआ। उसकी आँखे आग बरसाने लगी। वृक्षो की सूखी डालियो मे से एक डाली तोडी और दूर शहर की तरफ मुँह फेरकर चीख-चीखकर कहने लगा—

"अपना पसीना बहाकर मैंने जीवित रहने का प्रयत्न किया। मुझे सफलता न मिली। अब मैं अपनी भुजाओ के बल पर जीवित रहूँगा। प्रेम के मधुर नाम पर मैंने रोटी का एक टुकडा माँगा। घमण्डी इंसान ने मेरी बात न सुनी। अब मैं शत्रुता के नाम पर रोटी प्राप्त करूँगा और बहुत कुछ लेकर छोडूँगा… "

बहुत दिन गुज़र गये। नवयुवक भिखारी—माल और दौलत के लिये लोगो की गर्दन तोडने के काम मे लगा हुआ था। उसकी लिप्सा का देव इसानो के कोमल प्राण लेने मे व्यस्त था। उसकी दौलत बढ गई। उसके हमलो से लोग भयभीत होने लगे। वह राष्ट्र के डाकुओ का सरदार और धनिको के लिये एक भूत बन गया और अन्त मे सरदार ने—धनिको की ओर से गिडगिडाकर क्षमा माँगी।

इस तरह इसान विवश होकर अत्याचारी बनता है। और नेकी और सलामती की राह से निराश होकर कठोर दिल खूनी का रूप धारण कर लेता है।

*** प्रेमिका

पहली झाँकी——

निद्रा और जाग्रत अवस्था के बीच जीवन का भेद.करने वाली यही है। यह ज्योति का वह पहला प्रभात है जो मन के अंधकार मे प्रकाश का काम देता है। यह सारंगी के साज़ की वह आवाज है जो इंसान के दिल के तारो मे से पहले तार से निकले। यह वह घडी है जो बीते हुए दिलो की याद दिलाती है और बीती हुई रातो की कहानी दोहराती है। दुनिया की असार ज़िन्दगी का यथार्थ और परलोक के शाश्वत जीवन की वास्तविकता से दिलो को परिचित करती है। यह वह गुठली है जिसे सौन्दर्य और प्रेम का देवता आकाश से फेकता है। आँखे उसे अपनी खेती मे स्थान देती है। हृदय की प्रवृत्तियो की सिंचाई से वह सर निकालती है और मन के प्रयत्नों से वह फल देने लग जाती है। प्रेमिका की पहली नज़र उस आत्मा के समान है जो बादलो के समान उड़ती फिरती है और उसके दम से धरती और आकाश की सारी सृष्टि फूट पडी है। और सत्य यह है कि जीवन-साथी की पहली दृष्टि स्रष्टा के उस शब्द "तथास्तु" का दर्जा रखती है जिसके कहने से दुनिया की रचना हुई।

पहला चुम्बन——

पहला चुम्बन प्रेम-मदिरा का पहला पात्र है जिसे सौन्दर्य के देवता ने अपने हाथ से भरकर वितरित किया। यह दिल को दुखी करने वाली शंका

और हृदय को प्रफुल्लित कर देने वाले विश्वास के बीच की दूरी है । यह आध्यात्मिक जीवन की कविता का पहला चरण है—इसानी यथार्थ की पुस्तक का पहला पन्ना है । यह वह कडी है जो भूतकाल की कल्पनाओ को भविष्य की, मन को प्रसन्न करने वाली घडियो मे मिलाती है ।

यह वह घोषणा है जिसके द्वारा पहले चुम्बन मे चार मिलने वाले होट ऐलान करते है कि इस लोक और परलोक मे कोई अन्तर नही रहा । मुहब्बत गुलाम बन गई और वफादारी का मुकुट हमारे सर पर रखा गया—चार होटो का आपस मे एक दूसरे को छूना, गुलाव के फूल पर प्रात. समीर की अठखेलियो और ठण्डी आहे भरने की नकल उतारता है । जिससे सगीत से भरे तारो की आवाज़ निकलती है । यह पहला चुम्बन सुवह की उन ठण्डी हवाओ का सदेश है जो प्रेमी और प्रेमिका को काल्पनिक और भौतिक दुनिया से स्वप्न और आध्यात्म की दुनिया की ओर ले जाती है ।

और जव पहली झाँकी उस बीज के समान है जिसे सौन्दर्य के देवता ने मनुष्य के हृदय मे वोया तो पहला चुम्बन वह कली है जो जीवन की डाली पर सवसे पहले फूटी ।

मिलन—

यहाँ से मुहब्बत जीवन के विखरे हुए मोतियो को एक मे पिरोने लग जाती है । जीवन के विखरे हुए पन्नो को पुस्तक के रूप मे एकत्रित करना आरम्भ कर देती है । बीते हुए दिनो की जटिल गुत्थियाँ हल होती दिखाई देने लगती है और वीते हुए आनन्द को एक ऐसे सौभाग्य का रूप देती है जिससे वढकर और कोई सौभाग्य नही सिवाय उस घडी के जव मन अपने स्रष्टा से हमेशा के लिये जा मिलता है ।

मिलन, दो मजवूत दिलो का मिलकर कमजोर जमाने का मुकावला करने का वचन है । यह प्रात.काल उषा के नूरानी रग के समान शराव तैयार करने की भूमिका है । यह उस सोने की जजीर की आखरी

कडी है जिसकी पहली कडी प्रथम दर्शन और आखरी कडी शाश्वत जीवन है। यह नीले स्वच्छ आकाश पर उडता हुआ बादल है जो तबीअत की पवित्र धरती पर बरसता है ताकि उससे रंगबिरंगे सुन्दर फूल फूट पडे। पहली नजर मुहब्बत की खेती मे फेकी हुई गुठली की तरह थी। पहला चुम्बन जिन्दगी की पहली डाली पर फूटी हुई कली था और मिलन—पहली गुठली की पहली कली से पैदा हुआ पहला फल है।

*** दो मौतें

रात की नीरवता मे—मौत का फरिश्ता दुनिया के स्रष्टा के दरबार से, नीद मे बेसुध पडे हुए शहर की तरफ उतरा। शहर के सबसे ऊँचे मीनार पर खडे होकर उसने अपनी ज्वाला की तरह चमकती हुई आँखो से मज़दूर के टूटे हुए घर की जीर्ण-जीर्ण दीवारो पर दृष्टि डाली। नीद की दुनिया मे उडती हुई आत्माओ और नीद की आज्ञा पालन करने वाले शरीरो को देखा।

जब चाँद अरुणोदय मे छुप गया और शहर की आबादी ने काल्पनिक दुनिया का नकाब ओढ लिया, मौत भारी-भारी कदम उठाती हुई एक धनिक के आलीशान मकान के दरवाज़े पर पहुँची। कोई शक्ति उसके मार्ग मे बाधक न हो सकी और वह मकान के अन्दर दाखिल होकर मकान-मालिक के पलग के पास खडी होगई। उसके ललाट को धीरे-धीरे छुआ और इस तरह उसे नीद से जगाया। धनिक ने आँखे खोलकर मौत का खयाल अपने सामने खडा पाया। भय और निराशा से भरी हुई चीख़ उसके मुँह से बरबस निकली और बोला—"अय भयभीत करने वाले स्वप्न! मुझसे दूर हो जा। अय बुरे खयाल! हटजा! अय रातो को दूसरो के घरो मे घुसने वाले चोर! और बेसुध लोगो के आराम मे विघ्न डालने वाले शैतान! तू यहाँ कैसे आया और मुझ से क्या चाहता है? भाग जा यहाँ से! जानता नही कि मैं इस घर का मालिक हूँ। वापस लौट जा वरना अभी मेरे नौकर और चौकीदार आकर तेरी बोटियाँ नोच लेगे।"

अब मौत और निकट आई और बिजली की कडक के समान आवाज़ से उसे सम्बोधित करके कहने लगी—

"देख ! ख़बरदार होजा ! आँखे खोल ! मैं मौत ही हूँ ।"

धनिक ने उससे पूछा कि आख़िर तू मुझसे क्या माँगने आई है और मुझसे क्या चाहती है ?

"तू क्यो आई है ? तू मेरे समान धनी व्यक्तियों से क्या चाहती है ? जा, किसी गरीब-बीमार के पास जा । मेरी आँखो के सामने से हटजा । मुझे अपने ख़ून मे लिथडे हुए पजे और काले नागो की तरह लटकते हुए बाल न दिखा । जा, मैं तेरे भयानक बाजुओ और खूसट बदन को देखते-देखते उकता गया हूँ ।"

फिर थोडी देर खामोश रहने के बाद बोला—

'नही,नही, अय दयालु मौत ! मैंने जो कुछ कहा उसे माफ करदे । इसलिये कि डर के कारण पता नही मेरी ज़बान से क्या निकल गया ?— मेरे सोने के ढेर मे से जितनी इच्छा हो सोना ले ले । मेरे गुलामो की जितनी जानो की जरूरत हो ले ले । लेकिन मुझे अपनी हालत पर छोड़ दे...... मौत ! मुझे जिन्दगी के साथ अभी हिसाब साफ करना है और दुनियावालो से अभी अपना माल वसूल करना है । अभी मेरे माल से लदे हुए जहाज़ किनारे तक नही पहुँचे है और अभी धरती के अन्दर मेरे अनाज के अम्बार दफन है जो अभी तक उगे ही नही है । इन सब चीज़ो मे से जो भी तू चाहे ले ले, लेकिन मुझे छोड़ दे—मेरे पास सुन्दर और बन्द कलियो की तरह हसीन और नवजवान लौडियाँ है, उनमे से जिसे चाहे ले ले । अय मौत ! सुन, मेरा एक इकलौता लडका है—उससे मेरे जीवन की आशाएँ नत्थी है, चाहे तो उसे ले ले—मेरी हर चीज़ ले ले—लेकिन मुझे छोड दे ।"

वह इतना ही कहने पाया था कि मौत ने अपना पंजा उसके मुँह पर रख दिया—उसकी जान ले ली और उसे हवा मे उडा दिया ।

मौत फिर गरीब मजदूरो की बस्ती की तरफ गई । एक कच्चे

घर मे दाखिल हुई और एक खटिया के निकट खडी हो गई, जिस पर पन्द्रह वर्ष का एक नवयुवक मीठी नीद मे सो रहा था। थोडी देर तक उसके चेहरे की ओर—जिससे धैर्य और संतोष टपक रहा था, देखती रही। फिर उसकी आँखो पर अपना हाथ फेरा। वह जाग उठा और मौत को अपने निकट खडा देखकर उसके सामने घुटने टेक दिये और अपनी बाहे उसकी तरफ फैलाकर प्रेम भरे शब्दो मे कहने लगा—

"अय सौन्दर्य की देवी, मौत ! मैं हाजिर हूँ। अय मेरे स्वप्नो को साकार कर देने वाली और मेरी आशाओ की दुनिया मे बसने वाली मौत ! आ और मेरे प्राणो की भेट स्वीकार कर। मेरी प्रेयसी मौत ! मुझे अपनी गोद मे ले ले। तू बडी दयालु है। मुझे इस दुनिया मे न छोड। तू खुदा की भेजी हुई है, मुझे छोडकर न जा। मैंने तुझे कितना खोजा लेकिन न पा सका। मैंने तुझे कई बार पुकारा, लेकिन तूने मेरी पुकार न सुनी—अब तो सुन लिया। तू खुदा के लिये, आँखे फेरकर मेरी अभिलाषाओ पर पानी न फेर—मेरी प्यारी मौत ! मुझे गले लगा ले।"

मौत ने अपनी कोमल उँगलियाँ नवयुवक के होटो पर रखी और उसकी जान लेकर उसे अपने बाजुओ के नीचे छुपा लिया।

मौत आकाश मे उडने लगी और दुनिया की तरफ देखकर कहने लगी—"शाश्वत जीवन उसी को प्राप्त हो सकता है, जो शाश्वत जीवन से प्रेम करता है।

*** दोस्त से

मेरे निर्धन दोस्त ! यदि तुम जानते कि वह फाके जो तुम करते हो और जिनको अपना दुर्भाग्य समझते हो—वही है जो तुम्हे न्याय और समानता का मार्ग दिखाते है, वही है जो तुम्हे जीवन की यथार्थता से परिचित कराते है, तो मुझे विश्वास है कि तुम स्रष्टा के इस वितरण से खुश होते। इसलिये कि सोने-चाँदी के भरे खजाने पूँजीपति को इस से दूर रखते है। और जो मैंने यह कहा कि यह तुझे जीवन की यथार्थता से परिचित कराते हैं, वह इसलिये कि पूँजीपति जीवन की राह छोड कर मान, घमण्ड और अभिमान के रास्ते पर चल रहा है।

अय मेरे गरीब दोस्त ! तुझे न्याय और समता का रास्ता मुबारक हो। तूही उसकी जबान है और तुझे जीवन के भेद मुबारक हो। तू ही उस जीवन की किताब है। प्रफुल्लित होजा। तू ही अपनी मदद आप है। लोग तुझसे सहायता माँगते है और तुझे किसी की सहायता की जरूरत नही।

मेरे दुखी साथी ! यदि तू जानता कि ये विपत्तियाँ, जिनके पजे मे तू फँसा हुआ है, तेरे दिल को प्रकाशित करने वाली और तेरे मन को इस दुनिया के असार जीवन से यथार्थ के शाश्वत जीवन की तरफ उड़ा ले जाने वाली है, तो मुझे विश्वास है कि तू इन विपत्तियो को हद से ज्यादा पसन्द करता और उनके प्रभाव से प्रभावित हुए बिना न रहता और तू विश्वास कर लेता कि जीवन आपस मे फँसी हुई कडियो से बनी हुई जजीर है। और गम ! गम इस जजीर मे सोने की एक कडी

है जो वर्तमान पर सन्तुष्ट और भविष्य से प्रसन्न होने की दो कडियों को आपस मे जोडती है। बल्कि ऐसे जैसे सुबह का सुहाना वक्त नीद और चेतना को जोडता और अलग करता है।

मेरे दोस्त ! निर्धनता मन की शराफत को प्रकट करती है और धनाढ्यता उसकी नीचता को सामने लाती है। दुख हार्दिक प्रवृत्तियों को तेज़ करता है और खुशी उन्हे नष्ट करती है। इसान माल और खुशी को बढाने के लिये दिन-रात उनकी खिदमत मे लगा रहता है। वह गुनाह करता रहता है और उनको खुदा की तरफ नत्थी करता है। ऐसे ही वह इंसानियत की आड मे ऐसे करतूत करता रहता है जिनसे इसानियत पनाह मांगती है।

यदि धरती पर से भिखारियो का नामोनिशान मिट जाय, गम ढूँढने से न मिले तो विश्वास रखो कि मनुष्य का हृदय एक सफेद पन्ने की तरह रह जायेगा जिसमे घमण्ड और अभिमान तथा माल और दौलत की पाशिवक इच्छाओ के अलावा कोई चीज नजर नही आयेगी। उसमे केवल वे शब्द लिखे होगे जिनका अर्थ कामेच्छा के सिवा कुछ न होगा। इसलिये मैंने सोचा तो मालूम हुआ कि खुदा परस्ती तथा इसान के वास्तविक सुख और आनन्द, न धन-दौलत से बिक सकते है न जवानी की बदमस्तियो से फूलते-फलते है। मैंने और ध्यान से देखा तो मुझे स्पष्ट दिखाई दिया कि धनाढ्यता हृदय के वास्तविक आनन्द पर हर समय डाका डालने को तत्पर है और नवयुवक अपनी जवानी के नशे मे उससे धोखा खाता रहता है और आँखे बन्द करके उन इच्छाओ के पीछे-पीछे जा रहा है।

अय मजदूर किसान ! तेरी वह घडी जो खेत या कारखाने से वापस होकर अपनी जीवन-साथी और अपने मासूम बच्चो के साथ बैठकर गुजरती है, यही घडी उस शाश्वत जीवन का पता देती है जिसकी ओर तमाम दुनिया और दुनिया वाले दौडते जा रहे है। यदि तुम्हारे भावी

सुख और आनन्द की खुशखबरी सुनाती है—और धनवान का जीवन जिसे वह सोने-चाँदी के खजानो मे बैठकर गुजारता है—वह आने वाली बुरी जिन्दगी का पता देती है। ऐसी जिन्दगी का जैसे कब्रो मे कीडो की—खौफ और डर की जिन्दगी।

मेरे गमगीन दोस्त! याद रख, वह आँसू जो तेरी आँखो से मोतियो की लडी की तरह लगातार बहते रहते है, वह दुनिया के गम को दिल से भुलाने वाले इसान के तवस्सुम और गरीबो की हँसी उडाने वाले धनाढ्य के कहकहो से ज्यादा मीठे और स्वादिष्ट है। इसलिये कि ये आँसू दिल से ईर्ष्या और द्वेष का मैल धो डालते हैं। ये आँसू रोने वाले को बतलाते हैं कि टूटे हुए दिलो के टुकडे किस तरह खुदा से मिलते है। ये गम के नही बल्कि इसान की मदद करने वाले आँसू है।

अय गरीब मजदूर! खूब याद रख कि तूने अपनी जो शक्ति व्यय की है और जिसे सरमायादार ने सोने-चाँदी के बदले खरीद लिया है—यह शक्ति फिर लौटकर तेरे ही पास आयेगी। हर वस्तु अपने मूल की तरफ दौड़ी हुई जाती है—यही प्रकृति का नियम है। और अय दुखी साथी! सुना है कि तेरा यह गम प्रकृति के ही नियम के अनुसार खुशी मे परिवर्तित होगा और जरूर होगा।

करीब है कि आने वाली नस्ले गरीबी से समता का और गम के बादलो से मुहब्बत का पाठ सीखे।

*** मुहब्बत की बातें

आबादी से दूर छोटे से घर मे एक नौजवान बैठा हुआ कभी रौशनदान के रास्ते तारो से भरे हुए आकाश की ओर दृष्टि उठाता है और कभी उस तस्वीर को देखता है जो उसके सामने पडी हुई है। एक तस्वीर—जिसकी आकृति का प्रतिबिम्ब नौजवान के चेहरे पर पड रहा है और जिसके कारण तीनो लोको के भेद उस पर प्रकट हो रहे है—एक कुमारी की तस्वीर जो नौजवान से सरगोशी करती हुई मालूम होती है, अपनी बाते उसे उसकी आँखो के रास्ते सुनाती है। रौशनदान से दिखाई देने वाले वातावरण मे उडती हुई आत्माओ की बाते उसे समझाती हैं और उसके शरीर के हर-हर हिस्से को एक ऐसे दिल का आइना बताती है जो प्रेम की ज्योति से प्रकाशित है और जो नितात शौक बना हुआ है।

थोडी देर इसी तरह गुज़र गई। मेरे स्वप्न की एक घडी की तरह—जीवन के एक वर्ष की तरह—फिर नवयुवक ने तस्वीर अपनी आँखो के सामने रखी। कलम और कागज़ उठाया और लिखने लगा—

"मेरे प्राणो से प्यारी प्रेयसि !

"यह प्रत्यक्ष शरीर और यह दुनिया की गन्दगियो से घिरा हुआ दिल किसी व्यक्ति की दिन-प्रतिदिन की बातो से यथार्थ और प्रकृति की तरफ आकर्षित नही हो सकता। इस परिवर्तन के लिये पूर्ण सन्तोष और एकाग्रता की ज़रूरत है। और मैं जानता हूँ कि रात का यह

शान्त वातावरण हम दोनो के दिलो मे दौडता फिरता है। उसके हाथो मे उन पत्रो से अधिक मधुर पत्र हैं जो प्रात समीर पानी की सतह पर लिखता रहता है—यही फिजाएँ हम दोनो को एक दूसरे का सन्देश पढकर सुनाती हैं—लेकिन जिस प्रकार खुदा की इच्छा के अनुसार हमारी आत्माएं हमारे शरीर के कैदखानो मे वन्द पडी है उसी प्रकार प्रेम की इच्छा के अनुसार मैं बातो का कैदी हूँ।···प्रिये ! लोग कहते हैं कि प्रेम इंसान पर आग के शोलो की तरह असर करता है। लेकिन मैंने तो देखा कि विछोह के भयकर हमले हमे—हमारे वास्तविक शरीरो को—एक दूसरे से अलग न कर सके। जिस प्रकार प्रथम मिलने के दिन तू जान गई थी कि मेरा दिल तुझे बहुत पहले से जानता है और मेरी पहली नज़र भी वास्तव मे पहली नजर नही थी।

"प्रिये ! क्या तुझे वाग का वह दृश्य याद है जब हम खडे होकर एक दूसरे को घूर रहे थे ? और क्या तू जानती है कि तेरी नज़रे उस समय मुझसे क्या कह रही थी—कि यह मुहब्बत हमेशा-हमेशा रहेगी ? वह नजरे मुझसे कह रही थी कि मैं अपने दिल के द्वारा और लोगो तक यह सन्देश पहुँचा दूँ कि नेकी के बदले जो एहसान किया जाता है वह इतना टिकाऊ नही होता जितना वह एहसान होता है जो दया और करुणा की भावना से किया जाता है। और वह प्रेम जो कपोल के तेल को देखकर पैदा हो वह उस बदबूदार पानी की तरह है जो गन्दी नालियो मे बहुतायत से पाया जाता है।

"प्रिये ! मैं एक ऐसे जीवन की कल्पना कर रहा हूँ जो बहुत ही सुन्दर है। ऐसा जीवन जो आने वाली नस्लो को भाईचारे का सन्देश दे। उनमे प्रेम और विश्वास की भावना पैदा करे। ऐसा ही जीवन जो तेरे प्रथम मिलन से शुरू होता है और मुझे विश्वास है कि हमारा यह जीवन सदैव बना रहेगा। इसलिये मुझे विश्वास है कि तू मेरी भावनाओ को उभारने की शक्ति रखती है जो मेरे दिल मे छुपी हुई है। और तू

उन गुप्त शक्तियो को प्रत्यक्ष ला सकती है जिनके धुँधले निशान मेरी बातो और मेरे कामो मे दिखाई देते है। जिस तरह सूरज की रोशनी से बाग की महकती हुई कलियाँ खिलती है उसी तरह तेरी मुहब्बत से मेरी और आने वाली नस्लो की जिन्दगी खिलकर रहेगी और वह ऐसी होगी जिसमे घमण्ड और अहकार का नामोनिशान तक न मिलेगा और न ही उसमे तिरस्कार और निन्दा का डर होगा।"

इतना लिखने के बाद नवयुवक धीरे-धीरे कदम उठाता हुआ खिडकी की ओर गया। बाहर के वातावरण पर दृष्टि डाली। दूर क्षितिज पर चाँद नजर आ रहा था। उसकी हल्की चाँदनी और मृदुल किरणो से आकाश चमक रहा था। वह वापस लौटा और पत्र मे निम्नलिखित लाइनें बढादी—

"प्यारी ! मुझे क्षमा करदो। मैंने तुमसे ऐसी बाते की जैसे तुम मेरे सामने हो, हालाँकि तुम मुझे छोडकर उसी समय बिदा हो चुकी हो जब हम दोनों एक ही साथ स्रष्टा के हाथ से बनकर निकले थे। प्रिये ! मुझे क्षमा करदो ! मुझसे भूल हो गई।"

★★★ गूँगा जानवर

"जानवरो की शान्त निगाहो मे वह संकेत है जिनको केवल एक दार्शनिक की निगाह समझ सकती है।"

—एक हिन्दुस्तानी कवि

एक शाम को—जब मै अपने उलझे हुए विचारो मे दुनिया और दुनिया वालो को भूल चुका था—शहर के बाहर खुले हुए वातावरण मे घूम रहा था। चलते-चलते मै आबादी से दूर एक मकान के सामने ठहर गया। मकान की दीवारे गिर गई थी और उसके खम्भे टूट चुके थे। मकान की जीर्ण-शीर्ण दशा बता रही थी कि एक लम्बे समय से वहाँ कोई नही रहता। मेरी दृष्टि एक कुत्ते पर पडी जो मिट्टी मे लोट रहा था। उसका दुर्बल शरीर घावो से भरा हुआ था। वह निराशा भरी आँखो से पश्चिम मे डूबते हुए सूरज की तरफ टकटकी बाँधे देख रहा था। उसकी आँखे बता रही थी कि वह सूरज की आखरी किरणो को देखकर समझ गया है कि अब वह भी अपनी गर्मी से इस वीरान मैदान को वचित कर देना चाहता है जिसमे इस अशक्त कुत्ते के सिवा किसी और प्राणी का निशान तक न था।

वह दुखी नजरो से सूरज को देखकर मानो उसे विदा कर रहा हो मैं धीरे-धीरे उसके पास आया। मैं चाहता था कि काश ! मैं इस बेज़बान जानवर की आवाज़ समझ सकता और उसके दुख मे सम्मिलित हो सकता ! काश ! मैं उसके सामने अपनी सहानुभूति प्रकट कर सकता ! मुझे अपने पास देखकर वह डरा। अपनी पूरी शक्ति लगाकर,

जो अब समाप्त होने ही वाली थी, उसने अपने शरीर को हिलाया। अपने कमजोर पैरो पर खडे होने का असफल प्रयत्न किया और पूरी कोशिश के बाद निराश होकर मेरी ओर देखने लगा। उसकी दृष्टि मे दया माँगने की कटुता और मेहरबानी की मधुरता मिली-जुली थी। ऐसी दृष्टि जिसमे निन्दा और करुणा मिली हुई हो। ऐसी दृष्टि जो जबान का काम देती थी। ऐसी नजर जो मर्द की जबान से ज्यादा सादी और औरत के आँसुओ से अधिक अर्थभरी थी। और जब मेरी आँखे उसकी दुखी आँखो से टकराई तो मेरे विचारो मे गति पैदा हुई। मेरी भावनाएँ जाग उठी। मैं उस दृष्टि को शब्दो मे परिवर्तित करने लगा और इसान की जबान मे उन नजरो की बाते बयान करने की कोशिश की। ऐसी नजरे जो कह रही थी—

"मुझे अपनी हालत पर छोड दे। अत्याचारी इसान के हाथो मैने जो कष्ट उठाये, विभिन्न बीमारियो ने मुझे जहाँ पहुँचा दिया, मेरे लिये वही काफी है। जाओ! और मुझे मेरे हाल पर अकेला छोड दो। मैं सूरज की गर्मी से दो-चार घडी के जीवन की भीख माँगूँगा। मैं इंसान के अत्याचार और उसकी कठोर-दिली से तग आकर इस मिट्टी मे भाग आया हूँ जो इसान के दिल से अधिक दयालु है। और इस वीराने मे आ पडा हूँ जिसकी उपेक्षा उसके दिल से कही कम है। मुझे छोड दे। आखिर तू भी तो इसी धरती का बसने वाला इसान है जिसके कानून मे न्याय का नाम नही · · मै एक गरीब जानवर हूँ। मैंने इंसान की सेवा की। मैने निष्ठावान और वफादार रहकर उसके घर मे अपनी जिन्दगी गुजारी। उसका रखवाला बनकर उसके साथ रहा। मैंने उसके गम को अपना गम और उसकी खुशी को अपनी खुशी समझा। उसकी जुदाई के दिन एक-एक करके गिनता रहा और उसके आने पर खुशी से फूला न समाया। मैंने उसके दस्तरख्वान पर बचे हुए टुकडो और मुँह से फेकी हुई हड्डियो पर सन्तोष किया। लेकिन जब मैं बूढा और कमजोर हो गया, बीमारियो ने मेरे शरीर मे अपने पंजे गडा दिये और

✶✶✶ कवि

कवि इस लोक को परलोक से मिलाने वाली कडी है। वह मीठे पानी का वह चश्मा है जिससे प्यासी आत्माएँ तृप्त होती हैं। वह सौन्दर्य के दरिया के किनारे ताजा फलो से लदा हुआ वृक्ष है जिससे भूखे दिल फल तोडते हैं। वह कविता की डालियो पर उडने वाला बुलबुल है जो मधुर-मधुर गीत गाकर दिल के खाली कोनो को आर्द्रता और मृदुलता से भर देता है। वह उस श्वेत बादल के समान है जो लालिमा के किनारे से उठकर बढता जाता हे, बढकर ऊपर को उठता है और उठकर सारे आकाश मे छा जाता है। फिर वर्षा के रूप मे गिरता है कि जीवन के उद्यान को तृप्त करदे और उसकी कलियाँ खिल जाये। वह खुदा का भेजा हुआ फरिश्ता है ताकि लोगो तक खुदा की बाते पहुंचा दे। वह धरती पर छा जाने वाली चमक है जिस पर कभी अंधकार नही छा सकता और न वह किसी पर्दे के पीछे छुप ही सकता है।

वह इश्त्रदत्त—प्रेम की देवी और अपोलोन—सगीत की देवी से—अपना प्रकाश प्राप्त करता है।

वह अकेला रहने वाला इंसान है, जो सादे वस्त्र पहनता है और आनन्द के भोजन से अपने जीवन के दिन काटता है। तबीअत की कुर्सी पर बैठकर नई-नई बाते सिखाता है। रात की नीरवता मे जागकर आत्मा के उतरने का दृश्य देखता है। वह एक किसान है जो अपने दिल का बीज शाइर औरतो के खेत मे बिखेरता है, जिससे हरी-भरी खेती

★★★ मेरा जन्म दिन

६ दिसम्बर, १९०८ को पैरिस मे लिखा गया।

उसी दिन मेरा जन्म हुआ।

आज से २५ वर्ष पूर्व—इसी तारीख को—मैं सन्तोष और शान्ति की दुनिया से कोलाहल, उपद्रव, द्वेष और लडाई-झगडे से भरे हुए संसार मे फेंका गया।

मैंने पच्चीस बार सूरज की परिक्रमा की और मालूम नही कि चाँद ने कितने चक्कर मेरे आसपास काटे—लेकिन अब तक मै न तो प्रकाश का पता लगा सका और न अन्धकार के भेद जान सका।

मैंने पृथ्वी, चाँद, सूरज और सितारो के साथ एक महान् केन्द्र के पच्चीस चक्कर पूरे किये लेकिन मेरा मन अब तक उस महान् केन्द्र के नाम से भी परिचित नही। जिस तरह पानी की रौ समुद्र की लहरो की आवाज के साथ-साथ टूटती है और उनके अस्तित्व से उसका अस्तित्व नत्थी है, लेकिन फिर भी इसकी यथार्थता को नही जानते। समुद्र के उतार-चढाव की मीठी आवाज के साथ आवाज मिलाकर गीत गाते हैं लेकिन उतार-चढाव को पा नही सकते।

हर साल इसी तारीख को दूषित विचार, बिखरी हुई कल्पनाएँ और विभिन्न घटनाये, मेरे दिल मे पैदा होती हैं। बीते हुए दिनो की कहानियाँ मेरे सामने आती है। गुज़री हुई रातो के चित्र मेरी आँखो मे फिरने लगते है—लेकिन थोडी देर के बाद उनका नाम व निशान तक बाकी नही रहता। बिल्कुल उसी तरह जैसे लालिमा के किनारे

बादलो के टुकडे मामूली हवा से उडकर दूर की वादियो मे गायब हो जाते है।

हर साल—इसी तारीख को दुनिया के चारो कोनो से विभिन्न आत्माये मेरी तरफ दौडती नजर आती है। गम से भरे हुए गीत गाती हुई मुझे घेर लेती है। लेकिन फिर धीरे-धीरे लौट जाती है और आँखो से ओझल हो जाती है। ऐसे जैसे पक्षियो के झुण्ड विभिन्न आशाएँ लेकर वीरान धरती की ओर उडते है लेकिन उनको कोई दाना नजर नही आता और थोडी देर पर फडफडाकर किसी दूसरे स्थान का इरादा करके उड जाते है।

हर साल—इसी दिन। बीते हुए जीवन का यथार्थ जंग लगे आइने की तरह मेरी आँखो के सामने आता है। मैं देर तक टकटकी लगाये उन्हे देखता रहता हूँ लेकिन मुझे उनमे मौत से भी ज्यादा डरावने सालो के चिह्नो के सिवा और कोई प्रतिबिम्ब नजर नही आता। बूढे मर्दो के झुर्रीदार चेहरो की तरह अपनी आशाओ, स्वप्नो और असफल अभिलाषाओ पर मेरी नजरे पडती है। मैं अपनी आँखे बन्द करके फिर खोलता हूँ और फिर आइना देखने लग जाता हूँ और इस बार अपने चेहरे के सिवा और कोई चीज दिखाई नही देती। और जब गौर करता हूँ तो अपने चेहरे मे दुख और विपत्तियो के चिह्नो के अलावा किसी चीज के आसार नही पाता। मैं अपने इस दुख को सम्बोधित करना चाहता हूँ लेकिन वह गूँगा बन जाता है और बोलता नही। काश! मेरा गम ही मुझे कुछ सुनाता। इसलिये कि उसकी बाते ईर्ष्यालु दुनिया की बातो से बहुत अधिक मीठी होती।

इन गत पच्चीस वर्षो में मैंने अनेको को अपना प्रिय बनाया। मैंने अक्सर ऐसे लोगो से प्रेम किया जिनसे दुनिया घृणा करती थी। और अक्सर ऐसे लोगो को नफरत की नजर से देखा जिनको दुनिया अच्छा समझती थी। मेरा प्रेम शाश्वत होता है। मैंने बचपन मे जिसको अपना महबूब बनाया वह आज भी मेरा महबूब है। और जिससे मुझे

आज मुहब्बत है, मैं अपने जीवन के आखरी क्षण तक उससे मुहब्बत करता रहूँगा। मुहब्बत ही मेरे जीवन की पूँजी है। कोई शक्ति मुझसे मेरी मुहब्बत नही छीन सकती।

मैंने मृत्यु से मुहब्बत की। मैंने उसे सबके सामने भी और एकान्त मे भी मीठे-मीठे नामो से पुकारा। और इसके बावजूद कि मैंने मौत की मुहब्बत को दिल से नही निकाला। मैंने उससे अपनी मुहब्बत का प्रण नही तोडा। मैंने जीवन को भी प्यार किया। मेरे विचार में जीवन और मृत्यु दोनो ही सुन्दर है। दोनो प्यारे हैं। दोनो मेरे शौक और मुहब्बत की परवरिश करते है।

मैंने आज़ादी से मुहब्बत की। लोगो को अत्याचार के आगे सर झुकाते देखकर आजादी से मेरी मुहब्बत बढती गई। उनकी मूर्खता के अधकार मे भटकते हुए और अपने हाथ से गढे हुए बुतो को पूजते देखकर मेरी मुहब्बत और अधिक विस्तार धारण करती गई। लेकिन इसके बावजूद—आज़ादी से मुहब्बत के कारण—मैंने उन गुलामो को भी महबूब रखा जो अधो की तरह कांटो की तरफ बढते चले जा रहे थे। इसलिये मुझे उन पर दया आगई। काले नाग फन उठाये हुए उनके सामने खडे है और ये उनकी तरफ कदम बढा रहे है लेकिन उनको भान भी नही है। अपने ही हाथो अपनी कब्र खोद रहे है और उनको पता ही नही—मैंने सबसे अधिक प्रेम आज़ादी से किया है इसलिये कि वह उस कुमारी की तरह है जो एकान्त से घबराई हुई है। लोगो से दूर-दूर रहते हुए भी वह एक कोमल विचार की तरह घरो मे उड़ती फिरती है। रास्तो के मोड पर ठहरती है और उधर से गुज़रने वालो को पुकारती रहती है, लेकिन कोई उसकी आवाज पर ध्यान नही देता।

इन्ही पच्चीस वर्षो मे, सारे इंसानो की तरह नेकी और भलाई से प्रेम के सम्बन्ध स्थापित करना चाहे। मैं प्रतिदिन सवेरे उठकर

उसकी खोज मे निकलता लेकिन कभी मेरी दृष्टि उस पर नही पडी। न कभी इंसानो की बस्ती के चारो ओर धरती पर कहीं उसके पद-चिह्न ही दिखाई दिये। और न आराधनाघरो मे उसकी आवाज़ सुनाई दी। और जब मैंने अकेले उसकी खोज शुरू की तो मेरे अन्त.करण ने चुपके से मेरे कान में कहा—"नेकी दिल की गहराइयो मे पैदा होती है—वही परवरिश पाती है और वह दिल की दुनिया से बाहर कदम रखना पसन्द ही नही करती।" मैंने अपने दिल के कोनो को टटोला। उसका सारा उपकरण वहाँ मौजूद था—आइना, तख्त और अच्छे वस्त्र—लेकिन वह खुद वहाँ नही थी।

मैंने लोगो से भी प्रेम किया है। बहुत अधिक प्रेम किया है जो मेरी दृष्टि मे तीन प्रकार के है। कोई तो जीवन को कोसता है, कोई उसकी प्रशंसा करता है और कोई उसके बारे मे सोचता है। मैंने पहली प्रकार के लोगो से इसलिये प्रेम किया कि वह जिन्दगी को कोसते है। दूसरी प्रकार के लोगो से इसलिये किया कि वे प्रशसा करते है और तीसरी प्रकार के लोगो से उनके चिन्तन के कारण।

मेरे जीवन के पच्चीस वर्ष इस प्रकार व्यतीत हो गये। इस तरह मेरी रातें और मेरे दिन जल्दी-जल्दी बीत गये और मेरे जीवन की घडियो को कम करते गये। जिस तरह हेमन्त की सूखी हवाये वृक्षो के पत्ते झाडती है।

और आज थके हुए राहगीर की तरह, जो अपना आधा रास्ता तय कर चुका हो, खडा सोच रहा हूँ। चारो तरफ देखता हूँ मगर मुझे अपने भूत की कोई ऐसी निशानी दिखाई नही देती जिसकी ओर इशारा करके मैं कहा सकूँ कि यह मेरा है। जीवन की बहार का कोई फल दिखाई नही देता जिसकी तरफ उँगली उठाकर कह सकूँ कि यह मेरी बहार है। हाँ, गुनाह की काली स्याही से चितरे हुए कुछ पन्ने है और बेजोड शब्दो से काले किये हुए कुछ पृष्ठ हैं। इन बिखरे हुए पन्नो और मिटे हुए चिह्नो मे मेरा चिन्तन, मेरे विचार और मेरे

मीठे स्वप्न लिपटे-लिपटाये पडे है—जिस प्रकार किसान, दाने को धरती के अन्दर छुपाता है। मुझमे और उसमे केवल इतना अन्तर है कि वह शाम को आशाओ की दुनिया बसाते हुए घर लौटता है और मुझे अपने दिल की दुनिया बसने की न आशा है, न प्रतीक्षा है और न अभिलाषा।

अब—इस उम्र को पहुँचकर—दुख और निराशा के कुहरे के पीछे भूतकाल के धुँधले चिह्न दिखाई दे रहे है। और भविष्य का नकाब ओढे हुए आने वाली जिन्दगी मेरे सामने है। मै अपने दिल के आइने मे जीवन के यथार्थ को देख रहा हूँ। लोगो के चेहरो पर मेरी दृष्टि गडी हुई है। उनकी चीख और पुकार आकाश मे गूँज रही है। आबादियो मे चलते हुए उनके क़दमो की चाप मेरे कानो में पड रही है। उनके विचारो की मौजें और उनके दिलो की धडकने मैं अनुभव कर रहा हूँ। बच्चे खेलते, एक दूसरे के चेहरे पर मिट्टी फेकते, हँसते और कहकहे लगाते नजर आ रहे हैं। नवयुवक सर उठाये हुए चल रहे है और मालूम होता है कि सूरज की किरणो से लाल, दिल के किनारो मे जवानी के गीत गाने मे मग्न हैं। लडकियाँ मृदुल डालियो की तरह लचकती हुई, कलियो की तरह मुस्कराती और शौक व मुहब्बत से फडकती हुई, पलको के नीचे आँखो के कोनो से नवयुवको के यौवन से आनन्दित होने मे लीन है। बूढे—झुकी हुई कमर, लाठी का सहारा लेते हुए जमीन पर झुककर चलने मे इस प्रकार व्यस्त है मानो जीवन के खोये हुए मोतियो की तलाश मे है। मैं अपने मकान की खिडकी के पास खडे होकर दुनिया की इन सारी गतिवान तस्वीरो और सायो को ध्यान से देखता हूँ—इनकी गति मे भी एक सन्तोष दिखाई दे रहा है, जो शहर के गली-कूचो मे इधर-उधर दौडते फिरते है। फिर मैं शहर से बाहर की ओर दृष्टि उठाकर देखता हूँ तो स्थिर सौन्दर्य, बोलती हुई नीरवता, उजाड टीले, आकाश से बाते करने वाले

वृक्ष और उनकी लचकदार डालियाँ, महकने वाली कलियाँ, प्रकृति के गीत गाने वाली नदियाँ और बागो मे चहचहाने वाले परिन्दे नजर आते है और प्रकृति के, इस हरे-भरे उद्यान से जब नजर आगे बढती है तो अथाह समुद्र की लहरे किनारे से टकराती हुई दिखाई देती है। उसकी गहराई मे दफन जवाहरात, उसकी तली मे छिपे हुए रहस्य, उसकी सतह पर झाग से भरी हुई मौजे, आकाश मे उडने वाले बादल जो थोडी देर इधर-से-उधर उडने के बाद वर्षा के रूप मे फिर धरती पर आ जायेगे आँखो के सामने दिखाई देते हैं। समुद्र से आगे फैला हुआ आकाश जिसमे सितारे चमक रहे है, सूरज और चाँद घूमते रहते है।

मै इस दृश्य मे तल्लीन होकर अपनी उम्र के पच्चीस वर्ष, इस पहले गुजरी हुई नस्ले और आगे आने वाले कबीले—सब कुछ भूल जाता हूँ। मेरा अस्तित्व और मेरे चारो ओर घूमने वाली दुनिया अपने सारे उपकरण के साथ एक बच्चे की ठण्डी आह से ज्यादा महत्त्व नही रखती।

लेकिन इन हालात मे मुझे सिर्फ एक चीज, एक तुच्छ कण के अस्तित्व का अहसास होता है। उसकी गति का मुझे ज्ञान रहता है और उसकी आवाज़ मेरे कानो मे पडती रहती है—मुझे उसके यातायात का पता रहता है। कभी तो मुझे यो मालूम होता है कि वह अपने पर खोलकर ऊँचाई की तरफ उड रहा है—और थोडी देर मे उसके धरती की तरफ उतरने के लक्षण दिखाई देने लगते है। मैं सुनता हूँ कि वह चीख़-चीख़कर पुकारता है—"जिन्दगी—विदा! अय मीठे ख़्वाबो की दुनिया, विदा! अय धरती के अंधकार को अपने विवेक से भरने वाले रोज-ए-रौशन, विदा! और अय अपने अंधकार से आकाश के प्रकाश को प्रकट करने वाली रात, विदा! अय धरती की मस्त जवानी को वापस लाने वाले वसन्त! विदा! अय सूर्य की शक्ति का ज्ञान दिलाने वाली गर्मी! विदा! और अय इरादो को दृढ करने

वाली सर्दी ! विदा ! अय कौमो के विकार का इलाज करने वाले लोगो ! विदा । अय हमे कमाल की तरफ आकर्षित करने वाले ज़माने ! विदा ! अय जीवन की लगाम थामने वाली और सूरज का नकाब ओढकर छुपने वाली आत्मा ! विदा ! अय ऊँचे इरादो के मालिक दिल ! विदा !

और यह तुच्छ कण—मेरा दिल है—जो शाश्वत है और जिसके कारण मैं अपने आप को—मैं कहकर पुकारता हूँ ।

★★★ मृत्यु

मेरा दिल प्रेम के नशे मे चूर हो गया है। मुझे सो जाने दो। मेरी आत्मा दिन और रात की परिक्रमा कर-करके थक गई है। मुझे नीद की गोद मे पडा रहने दो।

मेरी कब्र के चारो तरफ दिये जलाओ। अगरबत्तियाँ और लोबान जलाओ और मेरे शरीर पर गुलाब और नरगिस के फूलो की पत्तियाँ बिखेर दो। मेरे बालो मे बारीक पिसा हुआ मुश्क लगा दो और मेरे ललाट पर मौत का लिखा हुआ ध्यान मे पढ़ो।

मेरी पलके इस बेदारी से बहुत थक चुकी हैं। अब मुझे नीद की गोद मे आराम करने दो।

मेरी कब्र के पास वीणा के तारो को छेडकर उनकी मधुर आवाज़ मेरे कानो तक पहुँचाओ।

जादू भरी आवाज से गाये हुए मधुर गीतो से मेरे कानो के पर्दे खोल दो और फिर मेरी आँखो से निकलती हुई आशा की किरणो को ध्यान से देखो।

मेरे प्यारे साथियो! आँसू पोछ लो और सुबह के समय सर उठाने वाली कलियो की तरह अपने सर उठाकर देखो। तुम देखोगे कि मौत की दुल्हन रौशनी के मीनार की तरह मेरी कब्र से आकाश में उठती हुई दिखाई देगी। थोडी देर के लिये अपने साँस रोक लो और उसके सफेद परो की आवाज को मेरे कानो से कान लगाकर सुनो।

९३

मेरे प्यारे भाइयो ! आओ ! मुस्कराते होंटो से मेरे ललाट को, अपनी पलको से मेरे होंटो को और अपने होंटो से मेरी पलको को चुम्बन देकर मुझे अन्तिम विदा कहो ।

बच्चो को मेरी मौत के बिस्तर के निकट लाकर खडा कर दो और उन्हे छोड दो ताकि अपनी कोमल उँगलियाँ मेरी गर्दन पर फेरे । बूढो को मेरे पास भेज दो कि वे अपने कठोर और पवित्र हाथ मेरे ललाट पर फेरे । कबीले की लडकियो को रहने दो ताकि वे खुदा का खयाल मेरी दोनो आँखो मे देखें और मेरी तेज सांस के साथ निकलता हुआ अनश्वर गीत अपने कानो से सुनें ।

*** विरह

पहाड की ऊँची चोटी पर आ पहुँची और मेरी आत्मा आज़ादी के वातावरण मे फिरने लगी।

मेरे प्यारे भाइयो ! मै तुम से बहुत दूर जा पहुँचा। आबादी के पास छोटे-छोटे टीले मेरी नज़रो से छुप गये। वादियो मे शान्ति और सन्तोष फैल गया। रास्तो और सडको के निशान तक भी बाकी नही रहे। सफेद बादलो ने जगलो, चरागाहो और हरी-भरी वादियो को ढँक लिया।

समुद्र की मौजो की मधुर आवाज कानो को सुनाई नही देती। शहर की उपद्रव और कोलाहल भरी आवाजे शान्त हो गई और मुझे आत्मा की शाश्वत और अनश्वर आवाज़ के अलावा कोई आवाज़ सुनाई नही देती।

सुख——

रुई से बने हुए कपड़े का कफन मेरे शरीर से अलग कर लो और मुझे वृक्षो के हरे पत्तो का कफन पहना दो।

हाथी दाँत के बने हुए ताबूत से मेरी लाश बाहर निकाल लो और नीबू के हरे पत्तो का तकिया बनाकर मेरे शरीर को लम्बा फैला दो। मेरे प्यारे भाइयो ! मेरी लाश पर रोओ नही बल्कि खुशी और मस्ती के गीत गाओ। अय खेतो मे फिरने वाली लड़कियो ! आँसू बहाना

छोड दो और कटनी के दिनो मे गाये जाने वाले मीठे गीत गाना शुरू कर दो।

मेरे सीने से लिपटकर दुख और निराशा की ठण्डी आहे भरना छोड दो और अपनी कोमल उँगलियो से मेरे दिल की मुहब्बत के तारो को छेडो और खुशी के सुर मिलाओ।

मेरे शोक मे काले कपडे पहनना छोड दो और मेरे ही कपडो की तरह श्वेत कपडे पहनकर मेरी खुशी मे शरीक हो जाओ।

हिचकियाँ ले-लेकर मेरे बिछुडने का दुख न मनाओ बल्कि आँखे बन्द करके देखो। तुम मुझे अब भी अपने बीच पाओगे। आज भी, कल भी और कल के बाद भी—हमेशा।

सर्ज के वृक्षो के झुरमुट मे मेरी कब्र खोदो जहाँ बनफशा के फूल खिलते हैं।

मेरी कब्र खूब गहरी खोदो ताकि बाढ का पानी मेरी जीर्ण हड्डियो को वादी मे बहा ले जाये।

मेरी कब्र खूब बडी हो ताकि रात को आने वाले साये मेरे पास बैठ सके।

मेरे ये कपडे फाडकर फेंक दो और मुझे बिलकुल नगा करके आराम के साथ अपनी धरती माता के सीने पर लिटा दो।

मेरे प्यारे दोस्तो! अब मुझे अकेला छोड दो और शान्तिपूर्वक वापस चले जाओ।

अपने घरो को वापस लौटो। वहाँ तुम्हे ऐसी चीजे मिलेगी जिनको छीन लेने की शक्ति मौत में भी नही है।

अब इस स्थान को छोड दो। इसलिये कि तुम जिसकी खोज मे हो वह अब इस दुनिया से दूर—बहुत दूर पहुँच गया है।

★★★ हवा से

अय ठण्डी हवा ! तू कभी तो खुशी के गीत गाती हुई उडती है और कभी शोकातुर ठण्डी आहे भरती हुई चलती है। तेरी आवाज तो हमारे कानो मे पडती है लेकिन हमारी आँखे तुझे देख नही सकती। तेरा अस्तित्व अनुभव तो होता है लेकिन तू नजर नही आती। तू प्रेम के उस सागर की तरह है जो हमारी आत्माओ को चारो ओर से घेरे हुए है लेकिन उन्हे डूबने नही देता। जो हमारे दिलो से खेलता है लेकिन हमारे दिलो मे कोई व्याकुलता नही।

हवा ! तू टीलो के साथ-साथ ऊपर चढती हे और वादियो की साथी बनकर नीचे उतरती है। तू हरे-भरे मैदानो और लहलहाते खेतो मे फैलती है। तेरे ऊपर चढने मे तेरे पक्के इरादे का हाथ है और उतरने में दया का भाव ! तेरे विस्तार मे आनन्द और मेहरबानी मिले हुए हैं। तू उस बादशाह की तरह है जो कमजोरो के साथ सुस्ती से काम लेता है और घमण्डी तथा शक्तिशाली लोगों के सामने अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है।

हेमन्त ऋतु मे तू वादियो मे रोती फिरती है और तेरे रोने से वादी के सब वृक्ष रोने लग जाते हैं। सर्दी में तू तेजी से हमला करती है। और तेरे साथ प्रकृति की शक्ति हमला करती है। बसन्त मे तू नाज-नखरे से चलती है और तेरी मृदुलता के कारण सारे खेत लहलहाने लगते हैं। और गर्मी मे तू शान्ति और सन्तोष का नकाब ओढकर छुप जाती

है। और हम समझते हैं कि सूरज के तीर खाकर तू मर चुकी है और सूरज ने तुझे अपनी गर्मी का कफ़न पहना दिया है।

लेकिन इतना तो बता दे कि हेमन्त ऋतु मे वृक्षो के वस्त्र छीनकर और उन्हे नगा छोडकर क्या तू उन पर रो रही थी या उनका मजाक उडा रही थी ?

सर्दी के मौसम मे—बर्फ से ढकी हुई रातो के आस-पास तू प्रकोपित होकर घूम रही थी या प्रसन्नता से नृत्य कर रही थी ? वसन्त मे क्या तेरी तबीअत कुछ ख़राब थी या उस प्रेमिका की तरह थी जो अपने प्रेमी से दूर रहने के कारण दुर्बल हो गई हो और ज़ोर-जोर से ठण्डी आहे भरकर अपने प्रेमी की तरफ छोड रही हो ताकि उसे गहरी नीद से जाग्रत कर दे। और गर्मी के मौसम मे क्या तू वास्तव मे मर गई थी या फलो के दिलो और अगूर की बेलो मे जागकर हमारा तमाशा देख रही थी ?

× × ×

तू शहर की सँकरी और अँधेरी गलियो से बीमारियो के कीटाणु और ऊँचे-ऊँचे सब्जाजारो से कलियो की मस्त सुगन्ध अपने साथ उडाकर लाती है। अच्छे दिल वाले ऐसा ही किया करते हैं कि जीवन की विपत्तियाँ धैर्य के साथ सहन करते हैं और उसी धैर्य के साथ अपनी खुशियो से भी मिलते हैं।

तू गुलाब के सुर्ख़ फूल के साथ कानाफूसी करती रहती है—और उसे प्रकृति के वे रहस्य बताती है जिनको सिर्फ वही समझ सकता है। कभी तो वह परेशान होता है और कभी मुस्कराने लगता है। ख़ुदा की इसानी आत्माओ के साथ ऐसी ही कानाफूसी करता रहता है।

तू कही तो आहिस्ता चलती है और कही प्रचड आँधी की तरह। लेकिन तू ठहरती कही-नही। यही हालत इसानी चिन्तन की है। उसका जीवन गतिमय है और सन्तोष उसके लिये मृत्यु का सन्देश है।

*** आँसू और मुस्कराहट

सूरज ने हरे-भरे खेतो से अपना दामन समेट लिया। चाँद दूर क्षितिज पर प्रकट हुआ और उसके कोमल प्रकाश से खेतो का सौदर्य निखर गया। मै पास ही वृक्षो की ओट मे बैठा वातावरण के इस परिवर्तन पर विचार कर रहा था। नीले आकाश पर सफेद मोतियो की तरह फैले हुए तारो को वृक्षो की डालियो के बीच से देख रहा था। और दूर से नदी के बहने की आवाज आ रही थी।

जब पक्षी पत्तो से लदी डालियो मे छुप गये, कलियो ने अपनी आँखे बन्द कर ली और चारो ओर नीरवता छा गई तो मेरे कानो मे किसी के कदमो की चाप सुनाई दी। मैने आँखे फेरकर देखा तो एक नवयुवक और एक नवयुवती को अपनी ओर आते हुए पाया। दोनो पास ही एक घने वृक्ष के नीचे बैठ गये। वे मेरी आँखो के सामने थे लेकिन मैं छुपा हुआ था।

थोडी देर के बाद नवयुवक ने चारो ओर देखा और सन्तोष की साँस लेकर कहने लगा —

"प्यारी! मेरे पास बैठ जा और मुझे अपनी मीठी-मीठी बातें सुना। मुस्करा, तेरी मुस्कराहट ही हमारे शानदार भविष्य का पता देती है। खुश हो! इसलिये कि जमाने की खुशी, हमारी ही खुशी से है। मेरी प्यारी! मुहब्बत मे अविश्वास पाप है। मेरा विचार है कि तुझे मेरे बारे मे शक है। लेकिन विश्वास रख कि यह चाँद की चाँदनी से प्रकाशित और हरे-भरे खेत तेरे ही होगे। और बादशाहो के महलो

की तरह यह आलीशान महल तेरे ही अधिकार मे होगा। गर्व से भरा हुआ दिल लेकर तू चमन की सैर किया करेगी और मेरे बहुमूल्य घोडे तुझे खेल-कूद के मैदानो मे लिये फिरेंगे।

प्रिये! मुस्करा, जैसे सोना मेरे खज़ाने मे मुस्कराता है और मुझे ऐसी आँखो से घूरकर देख जैसे मेरे बाप के एकत्रित किये हुए मोती मुझे घूरा करते हैं।

प्यारी! कान लगाकर सुन ले। मेरा दिल तुझे अपनी फरियाद सुनाये बिना आराम नही करता। वे दिन आने वाले हैं जब हम असीम धन लेकर स्विट्ज़रलैण्ड के सुन्दर दृश्यो का आनन्द लूटेंगे। इटली के उद्यानो मे घूमेंगे। नील के महलो और लिबनान की हरी-भरी वादियो मे ऐश के दिन गुजारेंगे। वह दिन बहुत जल्द आने वाला है जब मैं तुम्हे बहुमूल्य आभूषणो और सुन्दर कपडो मे सजा हुआ देखूंगा, जिन्हे देखकर दूर-दूर से आई हुई धनी औरतें और सुन्दर युवतियाँ तुझसे ईर्ष्या करने लगेंगी। क्या तू इन बातो से खुश नही हुई? आह, तेरी मुस्कराहट मुझे कितनी अच्छी लगती है! तेरे मुस्कराने से मेरी दुनिया जगमगा उठती है।"

थोडी देर बाद वह उठकर चलने लगा और नन्ही-नन्ही घास को अपने कदमो के नीचे इस तरह रौंदने लगा जैसे सरमायादार गरीब का दिल रौंदा करता है।

वे दोनो मेरी आँखो से ओझल हो गये और मै मुहब्बत की बातो मे दौलत के हस्तक्षेप पर विचार करने लगा। मैं दौलत को इसान के शैतानी विचारो का उद्गम और मुहब्बत को नेकी और प्रकाश का स्रोत समझ रहा था।

मैं इन्ही विचारो मे लीन था कि अचानक मेरे सामने से दो परछाइयाँ गुजरती हुई दिखाई दी। दोनो आगे जाकर बैठ गये। एक नवयुवक और एक कुमारी जो खेतो के उस तरफ से आये थे जहाँ गरीब किसानो की झोपडियाँ थी। थोडी देर तक नीरवता छाई रही। उसके बाद दिल की गहराइयो से ठण्डी आहो के साथ ये बातें सुनाई देने लगी—

"प्यारी ! आँसू न बहा। प्रेम ने जब चाहा, हमारी आँखें खोल दी और हमे अपना गुलाम बना लिया और प्रेम ही हमे धैर्य और बहादुरी प्रदान करेगा। आँसू रोक ले और धैर्य रख। हम प्रेम के धर्म पर ही एक दूसरे के सामने प्रेम की शपथ लेने आये हैं। प्रेम के कारण ही हम दरिद्रता, दुर्भाग्य और विरह की कठिनाइयो मे पडे हुए हैं। मै जमाने भर की विपत्तियो का सामना उस समय तक करता रहूँगा जब तक मेरे पास इतनी पूँजी एकत्रित न हो जाये जो तुझे भेट कर सकूँ, जो हमे अपना जीवन व्यतीत करने के लिये काफी हो।

प्रिये ! मुहब्बत के दरबार मे—जो खुदा का दरबार है—हमारी ये ठण्डी आहे और गरम-गरम आँसू अवश्य स्वीकार होगे और हमे निश्चय ही इनका उतना बदला मिलेगा जितने के हम पात्र हैं। अच्छा अब मै चलता हूँ, इसलिये कि मुझे चॉद छुप जाने से पहले-पहले चले जाना चाहिये।"

इसके बाद एक बारीक आवाज सुनाई दी जिसमे ठडी आहे मिली हुई थी—एक सुन्दर युवती की आवाज—जिसमे मुहब्बत की वह सारी गर्मी मिली हुई थी जो प्रेम की भावना, विरह की तीव्रता और आशा की मधुरता से उसके दिल व जिगर मे ठाटे मार रही थी। वह अपने प्रमी से अलग होते हुए "अलविदा ! अलविदा !" पुकार रही थी।

दोनो प्रेमी अलग-अलग हो गये। मैं उसी वृक्ष के नीचे बैठा हुआ इस विचित्र दुनिया के विचित्र हालात पर विचार करता रहा।

उसी समय मैंने अपनी निगाहे ऊपर उठाई और थोडी देर के लिये सोचने लगा। मैंने इसमे एक ऐसा भाव पाया जो असीम था। एक चीज जो धन-दौलत से खरीदी नही जा सकती। ऐसी चीज जिसे न हेमन्त के आँसू मिटा सकते हैं और न जाडे का गम। ऐसी चीज जिसे न स्विट्जरलैण्ड के दृश्य पा सकते हैं न इटली के उद्यान। मैंने एक ऐसी चीज पा ली जो हमेशा सब्र से काम लेती हुई बसन्त मे यौवन पर आती है और गर्मी मे फल देती है।—मैंने उसमे मुहब्बत पाई।

प्रकृति के राग

*** गीत

मेरे दिल की गहराइयो मे ऐसे गीत मचल रहे है जो शब्दो के वस्त्र पहनना पसन्द नही करते । ऐसे गीत जो दिल के खून से परवरिश पा चुकेहैं । वह स्याही की मदद से कागज के पृष्ठ पर बनना नहीं चाहते जो मेरे दिल की प्रवृत्तियो के आसपास बारीक और स्वच्छ गिलाफ की तरह फैले हुए हैं । वे मेरी जबान से मुँह की भाग बनकर निकलना भी अच्छा नही समझते ।

मैं भी उन्हे दिल से निकली हुई ठण्डी आहो के साथ मिलाकर फिज़ा मे उडाना पसन्द नही करता । इसलिये कि फिज़ा की धूल और गर्द से वे धूसरित हो जायेगे । मैं वे गीत किसे सुनाऊँ ? वे मेरे दिल के मकान मे रहने के आदी हो चुके हैं । वे सुनने वालो के कानो की कठोरता क्योकर सहन कर सकेगे ? यदि तुम मेरी आँखो मे आँखे डालकर देखो तो उन गीतो की गतिवान कल्पना की परछाइयाँ मेरी आँखो मे फिरती दिखाई देगी । और अगर तुम मेरी उँगलियो को छू दोग तो उनके स्पन्दन से वे उँगलियाँ गतिवान पाओगे ।

मेरी सब हरकतो मे इन्ही गीतो का प्रभाव प्रकट हो रहा है । जिस तरह कि समुद्र के पानी मे सितारो का प्रतिविम्ब साफ नजर आता है और वह मेरे आँसुओ के साथ बहकर निकलते रहते हैं । जिस तरह फूल की सुगन्ध धूप पडने पर ओस के साथ उडकर फिजा मे फैलती है ।

ऐसे गीत जो नीरवता मे सुनाई देते हैं और कोलाहल मे उनकी आवाज कानो मे नही पडती। स्वप्न की दुनिया मे जिन्हे अनुभव किया जा सकता है और जाग्रत अवस्था मे उनका चिह्न तक दिखाई नही देता।

अय दुनिया के बसने वालो! ये मुहब्बत के गीत हैं, कौन है जो इन्हे पढकर सुनाये, बल्कि कौन है जो इन्हे गाकर लोगो के कानो तक पहुँचाये ?

ये चमेली के फूलो से ज्यादा मृदुल और कुमारी के रहस्य से अधिक गम्भीर हैं।

—कौन है वह जो खुदाई के गीत गा सके!

मैंने कई बार निस्तब्ध टीलो को पुकारा लेकिन उन्होने मेरी पुकार नही सुनी। मैंने उन्हे हँसाने की कोशिश की लेकिन उनके होटो पर मुस्कराहट के लक्षण भी दिखाई न दिये। मैंने समुद्र के भँवर मे फँसी हुई बेजान लाशो को निकालकर जिन्दा इसानो के सामने रखा और सुन्दर औरतो के सौदर्य को असीम करने के लिये पानी की तह से मोती निकाले, लेकिन किसी ने मेरी ओर ध्यान नही दिया।

रात की नीरवता मे जब दुनिया की बसने वाली मानव जाति, नीद की बदमस्ती मे बेसुध पडी सोती है, मै जागती हुई कभी गीत गाती हूँ और कभी ठण्डी आहे भरती हूँ।

अफसोस है कि मुझे इस जागने ने खत्म कर दिया लेकिन याद रखो, मैं आशिक हूँ और इश्क नाम है बेदारी और जागते रहने का।

यही मेरा जीवन है और यही उसका उद्देश्य !

*** नेकी के गीत

इन्सान मेरा और मैं इसान का महबूब हूँ। मैं उसका उत्सुक और वह मेरा आशिक है। लेकिन अफसोस ! उसकी मुहब्बत में मेरा एक प्रतिद्वन्दी भी है जो मुझे कष्ट पहुँचाता है और उसे भी विपदा मे डाले रखता है। वह एक बागी शक्ति है—यानी भूल। जहाँ हम जाते हैं, वह हमारे पीछे-पीछे आता है और हमे एक दूसरे से दूर फेकने का प्रयत्न करता रहता है। मैं—खुले मैदानो मे—वृक्षो के नीचे और समुद्र के किनारे अपने महबूब—इसान को तलाश करती हूँ—लेकिन उसे नही पाती इसलिये कि भूत उसे धोखा देकर शहर की आबादी की ओर ले गया है—भीड की तरफ—विकार और दुर्भाग्य की तरफ।

मै उसे—इंसान को—अध्यात्म की पाठशालाओ और साइस की आराधनागाहो मे ढूँढती हूँ लेकिन वह नही मिलता। इसलिये कि भूत, जो मिट्टी के वस्त्र पहने रहता है—उसे घमण्ड और अभिमान के उद्‌गम की तरफ खीचकर ले गया है।

मै निस्पृहता और सन्तोष की हरी-भरी वादियो मे उसकी तलाश करती हूँ लेकिन वह यहाँ भी नही है। इसलिये कि मेरा दुश्मन—भूत—उसे लोलुपता के कैदखाने मे वन्द कर चुका है।

सुबह के सुहाने वक्त मे जब कि पूर्व मुस्कराता है—मैं उसे बुलाती हूँ, लेकिन वह मेरी आवाज नही सुनता। इसलिये कि वेसुधी की नीद से उसकी आँखें भारी होती हैं। शाम के वक्त जब नीरवता छा जाती है, कलियाँ सो जाती हैं—मैं फिर उसे पुकारती हूँ, लेकिन वह मेरी

ओर ध्यान नही देता—इसलिये कि कल की चिन्ता मे उसका मन व्यस्त रहता है ।

वह मेरा प्रेमी है । मुझसे मुहब्बत करता है—लेकिन वह अपने कामो मे मेरी तलाश करता है । हालाँकि मै खुदा के कर्मों मे ही मिल सकती हूँ । वह विवश मजदूरो की खोपड़ियो पर—सोने और चाँदी के ढेरो के बीच, निर्माण किये गये महल मे मुझसे मिलने की इच्छा रखता है—लेकिन मैं उसे समुद्र के किनारे, प्राकृतिक मैदान के स्वतन्त्र वातावरण मे ही मिल सकती हूँ । वह उपद्रवी और खूनी प्रत्याचारियो के जमघटे मे मेरा प्यार लेना चाहता है, लेकिन मै उसे अकेले मे—पवित्र कलियो ही के सामने अपना प्यार दे सकती हूँ । वह बहाने और ढोग को मेरे और अपने बीच साधन बनाना चाहता है—लेकिन मै केवल परोपकारी—नेक अमल ही को साधन बनाना चाहती हूँ ।

मेरे महबूब ने मेरे शत्रु—भूत से आर्तनाद करने की शिक्षा पाई है—लेकिन मुझे विश्वास उस समय आयेगा जब उसके दिल की आँखो से मुहब्बत के आँसू गिरेगे । और उसकी आहे उसके दिल की गहराइयो से निकलेंगी—मै उस वक्त समझूँगी कि महबूब मेरा है और मै सिर्फ उसी की हूँ ।

*** इंसान के गीत

"तुम बेजान थे। फिर तुम मे जान डाली। वही फिर तुम्हे मारेगा और फिर जिन्दा करेगाफिर तुम उसी की तरफ लौटाये जाओगे।"

—कुर्आन शरीफ

मै आदि से हूँ—आज भी हूँ और अन्त तक रहूँगा—मेरे अस्तित्व का कही अन्त नही।

मै असीम फिजा में तैरता रहा, काल्पनिक दुनिया में उडता रहा, ज्योति के स्रोत के निकट तक पहुँच गया लेकिन अब मै भूत का कैदी हूँ।

मैंने कफ्युशस की शिक्षाएँ सुनी। ब्रह्मा के दर्शन को समझा—जो बुद्ध के पास अध्यात्म के वृक्ष के नीचे बैठा रहा। लेकिन अब मैं अस्वीकृति और मूर्खता के साथ मुकाबले मे लगा हुआ हूँ। जब खुदा का नूर मूसा के सामने प्रकट हुआ तो मैं उस समय नूर पर ही था। मैने अरदन के रास्तो मे रहकर नासरी के चमत्कार देखे और मदीने में रहकर हजरत मुहम्मद के वचन सुने लेकिन अब मै जिज्ञासा का कैदी हूँ।

मैंने काबुल के आलीशान महल, मिस्र की शान और यूनान की महानता अपनी आंखो से देखी। लेकिन इन तमाम महानताओ में दुर्बलता, तिरस्कार और घृणा साफ नजर आई। मै मिस्र के जादूगरो,

अश्वर के ज्योतिषियो और फिलिस्तीन के अम्बियाओ के साथ बैठा रहा और हिकमत के गीत गाता रहा । हिन्द पर उतरी हुई हिकमत मैंने ज़बानी याद कर ली । अरब के रहने वालो के दिलो से निकले हुए शेर मैंने याद कर लिये । पश्चिमी देशो के लोगो की जबान से निकले हुए सगीत को मैने अपने दिल में जगह दी—लेकिन मैं फिर भी अधा ही रहा और मुझे कुछ नजर न आया । बहरा रहा और कुछ न सुना । लालची विजेताओ के अत्याचार सहन किये । अत्याचारी शासको के अत्याचार सहे । बागी अभिमानियो के आगे सर झुकाया—लेकिन मैं फिर भी जमाने का मुकाबला करने से विवश ही रहा ।

मैंने यह सब कुछ देखा और सुना जब मै बच्चा था और शीघ्र ही मैं अपनी जवानी के कर्मो का भी निरीक्षण करूँगा । लेकिन बहुत जल्द मेरा बुढापा आयेगा । मै कमाल तक पहुँचूंगा और ख़ुदा की तरफ लौट जाऊँगा ।

मै आदि से हूँ—अब भी हूँ और जमाने के अन्त तक रहूँगा । मेरे अस्तित्व का कोई अन्त नही ।

★★★ वर्षा के गीत

मै चाँदी का सफेद चमकता हुआ तारा हूँ। खुदा मुझे ऊपर से धरती पर फेंक देता है—तबीअत मुझे पकडकर वादियो मे बहा देती है।

मै म · के ताज का बिखरा हुआ मोती हूँ। बादल मुझे चुरा लाया और खेती मे बिखेर दिया।

मैं रोती हूँ तो हरे-भरे टीलो के चेहरो पर मुस्कराहट खेलती है और मै नीचे गिरती हूँ तो कलियाँ अपनी गोद मे उठा लेती हैं।

बादल और खेत—दोनो एक दूसरे के आशिक हैं, मैं उनके बीच दूत हूँ। मै बरसती हूँ तो एक की प्यास बुझाती हूँ और दूसरे की गर्मी को कम करती हूँ।

बिजली की कडक मेरे आने की शुभ सूचना देती है और इन्द्र धनुष मेरी यात्रा समाप्त होने का पता देता है—ऐसे ही विलक्षण तत्वों से दुनिया के जीवन का आरम्भ होता है और शान्तिमय मृत्यु के हाथो उसका अन्त होता है।

मैं समुद्र के हृदय से उठकर आँधी के परो पर उडती हूँ और जब कोई सुन्दर उद्यान मेरे सामने आता है तो मैं वहाँ गिर पडती हूँ। उसकी कलियो के चुम्बन लेने लग जाती हूँ और उसकी डालियो से गले मिलती हूँ।

नीरवता के समय—मैं अपने कोमल और मृदुल हाथो से रौशनदानो के शीशो को छेडती हूँ और उनसे एक ऐसा राग निकलता है जिसे भावुक हृदय ही सुन सकते हैं।

हवा की गर्मी मेरे जन्म का कारण है लेकिन मै हवा की गर्मी की कातिल हूँ। ऐसे ही औरत अपनी उस शक्ति ही के द्वारा विजय प्राप्त करती है जो मर्द की प्रदान की हुई होती है।

मै समुद्र की ठण्डी आह हूँ—आकाश के आँसू हूँ और खेती की मुस्कराहट हूँ—उसी प्रकार मुहब्बत—दिल की प्रवृत्तियो के समुद्र की ठण्डी आह है—चिन्तन के आकाश का आँसू है और हृदय की खेती की मुस्कराहट।

*** कवि की आवाज़

शक्ति मेरे दिल की गहराइयो मे बीज बोती है। मैं उस खेती को काटता हूँ और उसके गुच्छो को एकत्रित करके भूखे इसानो मे वितरित किया करता हूँ। आत्मा इस छोटे से प्याले को भरती है और मै उसकी शराब लेकर प्यासो को तृप्त करता हूँ। आकाश उस चिराग को तेल से भरता है, मैं उसे जलाता हूँ और राहगीरो के लिये उसे रात के अधकार मे अपने घर की खिडकी मे रख लेता हूँ। मैं यह सब काम इसलिये करता हूँ कि इन्ही से मेरा जीवन है। और जब ज़माना मुझे इन कामो से रोकता है और मैं रातो के हाथो कैदी बन जाता हूँ तो मौत माँगने लगता हूँ। इसलिये कि बागी अनुयायियो के पैगम्बर और अपने ही लोगो मे रहने वाले अनजान शायर के लिये मौत से बेहतर कोई चीज नही।

इसान तेज़ हवाओ की तरह शोर मचाते हैं और मै धैर्य से ठण्डी आहें भरता हूँ। इसलिये कि मै समझता हूँ कि जमाने के एक ही झकोले मे इन हवाओ की तीव्रता खत्म हो जायेगी लेकिन ठण्डी आहे खुदाई हाथो मे हमेशा-हमेशा बाकी रहेगी।

इसान बर्फ की तरह ठण्डे तत्त्व से मिलते हैं। और मै मुहब्बत की गर्मी की खोज मे हूँ कि उसे अपने सीने से लगाऊँ ताकि वह मेरी पसलियो को खा ले और मेरे जिगर को काट दे। इसलिये कि मैने देखा है कि तत्त्व तो इसान को बिना कष्ट के मार देते हैं लेकिन मुहब्बत इसान को मुसीबत मे उलझाकर जीवन प्रदान करती है।

इसान विभिन्न जातियो और कबीलो मे बँटे होते हैं और विभिन्न देशो और शहरो से सम्बन्धित होते हैं लेकिन मै स्वय को एक ही शहर मे अजनबी पाता हूँ। मैं अपनी जाति का अकेला व्यक्ति हूँ। सारी धरती मेरा देश है। और सब इसान मेरे कबीले के हैं। इसलिये कि मुझे मालूम है कि इसान अशक्त है और यह उसकी मूर्खता है कि वह अपने आपको अलग-अलग टुकडियो मे बाँटता है। और धरती भी तग है उसे हुकूमतो और देशो मे बाँटना मूर्खता है।

मानव जाति आत्मा को खत्म करने और शरीर की दुनिया आबाद करने मे व्यस्त है। इस काम मे इसान एक दूसरे की मदद करने मे लगा हुआ है। और मैं अकेला सबका शोक-गीत पढता हूँ। मै कान लगाकर सुनता हूँ तो अपने अन्त करण से मुझे एक आवाज सुनाई देती है जो कहती है—

"जिस तरह मुहब्बत इसानी दिल को विपत्तियो मे जकडकर जीवन देती है—उसी प्रकार मूर्खता उसे अध्यात्म का मार्ग दिखाती है। विश्वास रखो कि ये विपत्तियाँ और यह मूर्खता एक बडे आनन्द और पूर्ण अध्यात्म का सूचक हैं। इसलिये कि खुदा ने सूरज के नीचे कोई वस्तु बेकार पैदा नही की।"

२

मै अपने देश का अभिलाषी हूँ। उसके सौदर्य के कारण अपने देश-वासियो से प्रेम करता हूँ। लेकिन जब मेरा राष्ट्र राष्ट्रीय धर्मान्धता की पट्टी अपनी आँखो पर बाँधकर किसी निकटवर्ती राष्ट्र पर हमला करता है, वहाँ के लोगो के जान-माल को हानि पहुँचाता है, लोगो को कत्ल करता है, बच्चो को अनाथ और स्त्रियो को विधवा बनाता है, वहाँ की धरती को वही के वासियो के खून से तृप्त करता है और वहाँ के गिद्धो को उसी देश के नवयुवको का गोश्त खिलाता है, तो उस समय मुझे अपने देश से भी घृणा हो जाती है और देशवासियो से भी।

मैं अपने जन्म-स्थान का जिक्र सुनकर प्रसन्न होता हूँ और जिस घर मे मेरा लालन-पालन हुआ था उसका अभिलाषी रहता हूँ। लेकिन जब कोई यात्री गुजरते हुए उस भर मे शरण माँगने लगता है और वहाँ के रहने वालो से जीवित रहने भर के लिये थोडे से अन्न की याचना करता है और उस समय उसे धक्के मारकर निकाल दिया जाता है तो मै—उस समय—उस घर का शोकगीत पढने लगता हूँ—उस शोक को अपने दिल से निकाल देता हूँ और अपने दिल से कहता हूँ—

"वह घर जो किसी भूखे को रोटी का एक टुकडा देने मे कृपणता से काम लेता है और बिस्तर माँगने वाले को बिस्तर देने मे आनाकानी करता है, वह घर नष्ट-भ्रष्ट कर देने के योग्य है।"

मुझे अपने देश से थोडा-सा प्रेम है और उसी कारण मै अपने जन्म-स्थान से भी प्रेम करता हूँ और मुझे चूँकि अपने असली देश—सारी धरती से—मुहब्बत है, इसलिये मुझे अपने मालिक से भी प्रेम है। मैं धरती से इसलिये प्रेम करता हूँ कि वह मानवता की—धरती पर आत्मा की—चरागाह है—लेकिन मानवता—धरती पर आत्मा का प्रतिबिम्ब—वीरानो मे खडी है। वह अपने नगे शरीर को फटे-पुराने कपडो से ढँकने का प्रयत्न कर रही है। गर्म-गर्म आँसू उसके पीले गालो पर बहते रहते हैं। वह अपने बेटो—इसानो—को ऐसी करुण आवाज से अपनी ओर बुलाती है जिससे सारे आकाश की फिजा आर्तनाद की सदाओ से भर जाती है। लेकिन उसकी औलाद—इसान तरफदारी के गीतो मे मस्त पडे हैं और उसकी फरियाद नही सुनते। तलवार की झकारो मे वह उसके आँसुओ की तरफ देख भी नही सकते। दूर अकेली बैठी हुई मानवता राष्ट्र को अपनी सहायता के लिए बुलाती है लेकिन वह सुनते ही नही और यदि भूले-भटके से किसी इसान ने उसकी फ़रियाद सुन भी ली और उसके निकट आकर उसके आँसू पोछने लगा और उसकी विपत्तियो मे उसे धैर्य दिलाने की कोशिश करने लगा

तो कौम कहने लगी—"उसे छोड दो—आँसू बुजदिल और कमजोर पर ही अपना असर करते हैं।"

मानवता धरती पर परमात्मा का रूप है। यह आत्मा कौमो के बीच फिरकर उनको मुहब्बत का रास्ता दिखाती है। जो जीवन के रास्तो की मार्ग दर्शक है लेकिन लोग उसकी बातो और शिक्षाओ पर हँसते हैं और उसका मजाक उडाते है। यही वह आत्मा है जिसकी आवाज कल नासरी ने सुनी तो लोगो ने उसे फाँसी के तख्ते पर लटका दिया। सुकरात ने उसकी आवाज मे आवाज मिलाई तो उसे जहर दे दिया गया और जिसकी आवाज आज भी कुछ लोगो ने सुनी और वे नासरी और सुकरात के दर्शन को मानने लगे। लोगो को इस परम आत्मा की तरफ पुकार-पुकारकर बुलाया। लोग उन्हे कत्ल तो नही कर सके, लेकिन यह कहकर उनका मजाक उडाने लगे कि "मजाक कत्ल से अधिक कठोर और कडवा होता है।"

यरूशलम के निवामी नासरी को कत्ल न कर सके और न वे सुकरात को खत्म कर सके। वे दोनो तो हमेशा-हमेशा जीवित रहेगे। इसी तरह मानवता की आवाज मे आवाज़ मिलाने वालो के ऊपर इस मजाक का भी कोई असर नही होगा और वे हमेशा-हमेशा तक ज़िन्दा रहेगे।

३.

हम दोनो एक ही पवित्र आत्मा की सन्तान हैं और मेरे भाई हैं। हम दोनो एक ही प्रकार की मिट्टी के बने हुए शरीरो के कैदी हैं। और यही कारण है कि तुममे और मुझमे कोई अन्तर नही है। तुम जीवन के मार्ग मे मेरे साथी हो और इस यथार्थ को जो बादलो के पीछे छुपा हुआ है, मालूम करने मे मेरे सहायक हो। मेरे भाई! तुम इसान हो और मैं तुम्हे दिल से चाहता हूँ।

तू मेरे बारे मे जो चाहे कहता रहा। दुनिया अपना फैसला देगी और तेरा वक्तव्य उसके फैसले और उसके इसाफ के लिये मार्ग-दर्शक सिद्ध होगा।

मुझमे जो चाहे लेता रह। इसलिये कि तू मुझसे वही माल छीनेगा जिस पर तेरा भी अधिकार है। यदि तू थोडे से हिस्से पर राजी हो जाता है तो निश्चय ही उसका कुछ हिस्सा तेरा है।

मेरे साथ जो चाहे कर। इसलिये कि तू मेरी वास्तविकता पर हाथ मारने मे असमर्थ है। तू मेरा खून बहादे, मेरे शरीर को जलादे लेकिन तू न मेरे दिल को कष्ट पहुँचा सकता है न उसे मार सकता है। मेरे हाथो मे लोहे की हथकडियाँ और पैरो मे बेडियाँ डाल दे और मुझे कैदखाने की अँधेरी कोठरी मे बेशक बन्द कर दे, लेकिन याद रख तू मेरे विचारो को कैद करने मे सफल नही हो सकता। वह तो आकाश मे उडने वाले प्रात समीर की तरह स्वतन्त्र हैं। न उनकी कोई आवाज है न सीमा।

तू मेरा भाई है और मैं तुझे चाहता हूँ।

मै तुझे मस्जिद मे सजदा करते हुए, आराधनाघरो मे झुके हुए और अपने गिरजाघर मे पूजा करते हुए—हर हालत मे चाहता हूँ—इसलिए कि हम दोनो एक ही धर्म—आत्मा—की सन्तान हैं।

मैं तुमसे तेरी उस वास्तविकता के कारण प्रेम करता हूँ जो तूने अपनी बुद्धिमानी से प्राप्त की है। वह वास्तविकता, जिसको मै इस समय अपनी दृष्टिहीनता के कारण नही देख सकता, लेकिन मेरे दिल मे उसकी इज्जत है। इसलिए कि वह दिल के कर्मो मे से है। वह वास्तविकता जो परलोक मे मेरी वास्तविकता से मिलेगी और कलियो की मस्त सुगन्ध की तरह एक-दूसरे मे घुल-मिल जायेगी, प्रेम और सौदर्य के शाश्वत जीवन के कारण वे दोनो भी एक ही वास्तविकता के रूप में अन्त तक जीवित रहेगी।

मैं तुझसे इसलिये मुहब्बत करता हूँ कि मैंने तुझे कठोर-दिल शक्तिशालियो के सामने दुर्बल पाया। लोलुप धनिको की आलीशा महलो की छाया मे तुझे विवश और निस्सहाय देखा। तेरी दशा देखकर मैं रोया लेकिन अपने आँसुओ के पार तुझे न्याय के हाथो मे जो तुझे देखकर मुस्करा रहा था और तेरे लिए परेशान हाने वालो की मूर्खता का मजाक उडा रहा था।

तू मेरा भाई है और मै तुझे चाहता हूँ।

४

तू मेरा भाई है। मै तुझ चाहता हूँ। फिर तू क्यो मुझसे लडता है। आखिर तू क्यो मेरे देश की तरफ आता है और मुझे अपमानित करने का इरादा रखता है। क्या उन लोगो के लिये जो तेरी बातो से प्रतिष्ठा और तेरे कष्टो से प्रसन्नता प्राप्त करने की कोशिश करते हैं? तू क्यो अपनी जीवन-साथी—पत्नी—और अपने छोटे छाटे मासूम बच्चो को छोडकर मोत के पीछे-पीछे घर से दूर किसी और की धरती पर जाता है? क्या उन अत्याचारी शासको के लिये जो तेरे खून से सत्ता खरादना और तेरी माँ की व्यथाओ से अपने लिये उच्च स्थान प्राप्त करना चाहते हैं? लेकिन क्या यही उच्च स्थान है कि इसान अपने भाई की जान ले ले।

वह कहते हैं कि भाई! अपने अस्तित्व की रक्षा एक स्वाभाविक चीज है। लेकिन फिर मैं उन्ही लोगो को मै देखता हूँ कि वह तुझे अपने अस्तित्व के मिटाने पर इससिये राजी कर लेते हैं कि तू अपने भाइयो को उनका गुलाम बना दे। और वह यह भी कहते हैं कि बाकी रहने के लिये जरूरी है कि दूसरो के अधिकारो पर छापा मारा जाये। लेकिन मै कहता हूँ कि दूसरो के अधिकारो की रक्षा ही अच्छे कर्मो मे से एक कर्म है। मैं यह भी कहता हूँ कि तू मेरी जिन्दगी से दूसरो को मौत आती है तो फिर मेरे लिये मौत अधिक आनन्ददायक और प्रिय है।

अहकार ही अधी तरफदारी के जन्म का कारण बना और तरफ-दारी के पजे मे आकर लोग आपम मे लडने-झगडने और एक दूसरे को गुलाम बनाने पर आमादा होते हैं। मूर्खता को प्रेम और अत्याचार को बुद्धि और न्याय के पराधीन बनाना चाहता है। लेकिन वह ऐसे शासन के विरुद्ध है जो अत्याचार और अज्ञान को और अधिक फैलाए।

वह आधिपत्य जिसने बाबुल की ईट से ईट बजा दी—यरूशलम की बुनियादो को जड से उखेड दिया। वह आधिपत्य जिसने वह खूनी अत्याचारी पैदा किये जिनको लोग महान् व्यक्तित्व मानने लगे और किताबो मे उनके नाम मोटे-मोटे अक्षरों मे लिखे जाने लगे—और जिस तरह धरती ने—उस समय, जबकि वे इसी धरती को बेगुनाहो के पवित्र खून से रग रहे थे, अपनी सतह पर चलने से नही रोका—उसी तरह किताबे उनकी लडाइयो के किस्सो को अपने पृष्ठो पर जगह देगी।

फिर अय भाई! तुम इस धोखा देने वाली तरफदारी से कितना धोखा खा चुके इस प्रकार की हानिकारक चीज से कितनी हानि उठा चुके? वास्तविक आधिपत्य केवल ज्ञान है जो लोकप्रिय, न्यायपसन्द, प्राकृतिक कानून का रक्षक हो। क्या यह भी कोई न्याय है कि कातिल को तो तुम कानून के अनुसार कत्ल करते हो, लुटेरो को कैद करते हो। लेकिन फिर खुद ही एकत्रित होकर अपने पडोसी देशो पर हमला करके हजारो बेगुनाहो का खून करते हो और उनका माल लूटते हो।

आखिर तरफदारी रखने वाले इनके बारे मे क्या हुक्म देते हैं? जो स्वय कातिल होते हुए दूसरे कातिलो को फाँसी पर लटकाते हैं और लूटने वालो को कैद करते हैं, हालाँकि वह खुद लुटेरे हैं।

तुम मेरे भाई हो। और मैं तुम्हे चाहता हूँ और मुहब्बत, न्याय ही का दूसरा नाम है। तो यदि मैं तुमसे मुहब्बत करते हुए हर जगह न्यायी न रहूँ तो विश्वास रखो कि मैं वह धूर्त हूँगा जो मुहब्बत के बेहतरीन कपडो को घमण्ड के कपडो मे छिपाता हो।

★★★ सौन्दर्य के गीत

मैं प्रेम का तर्क, मन की शराब और दिल का भोजन हूँ।

मै गुलाब का वह फूल हूँ जो दिन चढे खिल जाता है। कुमारी युवतियाँ उसे तोडती हैं, उसके चुम्बन लेती हैं और फिर उसे अपने सीने से लगा लेती हैं।

मै सौभाग्य का शानदार महल हूँ। मैं ख़ुशी का स्रोत हूँ और ऐश्वर्य का उद्गम हूँ।

मैं नाजनीन कुमारी के होटो पर कोमल मुस्कराहट हूँ। नवयुवक मुझे देखता है तो वह दुनिया की विपत्तियाँ भूल जाता है और उसका जीवन मधुर स्वप्नो की दुनिया मे बदल जाता है।

मैं शायर के दिल की परोक्ष की आवाज़ हूँ। चित्रकारो और सगीतज्ञो का गुरु हूँ।

मैं मासूम बच्चे की आँखो मे समाई हुई वह ज्योति हूँ कि जब माँ उस पर नजर डालती है तो ख़ुदा की आराधना—उसके सामने माथा टेकने और उसे धन्यवाद देने मे व्यस्त हो जाती है।

मैं आदम के सामने हव्वा के रूप मे प्रकट हुआ और उसे अपना गुलाम बनाया और सुलेमान के सामने उसकी प्रेमिका के रूप मे प्रकट हुआ और उसे शायर और दार्शनिक बनाया।

मै हेलाना के सामने मुस्कराया तो तरवादा को बर्बाद किया और किलोपतरा को मुहब्बत का ताज पहनाया तो नील की सारी वादी मुहब्बत के गीतो से गूंज उठी।

मैं जमाने की तरह हूँ। आज एक चीज़ बनाता हूँ, कल उसे मिटा देता हूँ। मै ख़ुदा हूँ—पैदा करता हूँ और मारता हूँ। मैं बनफ्शा की कली की ठण्डी आहो से अधिक कोमल और प्रचण्ड आँधी से अधिक कठोर हूँ।

लोगो ! सुनो, मै ही यथार्थ हूँ—अच्छी तरह समझ जाओ कि मैं ही यथार्थ हूँ।

*** उपसंहार

मेरा मन, मेरा वह साथी है कि जब दुनिया की विपत्तियाँ तीव्रता धारण कर लेती हैं तो वह मुझे धैर्य बंधाता है और जब जीवन के कष्ट मुझे घेर लेते हैं तो वह सहानुभूति प्रकट करता है। जो अपने मन का साथी न हो वह लोगो का दुश्मन होगा और जिसे अपनी जाति मे से कोई मित्र और सहायक न मिला हो वह निराश होकर मरेगा। इसलिये कि जीवन इसान के अन्दर से निकलता है—बाहर से कभी नही आता।

मै इसलिये आया कि कुछ बाते सुनाऊँ और मैं सुनाकर रहूँगा। यदि मृत्यु मुझे उसके कहने का अवसर नही देगी तो आने वाला समय उसे कहेगा। इसलिये कि जमाना जीवन की किताब मे कोई बात छुपी हुई नही छोडता।

मै इसलिये कह आया था कि प्रेम की महानता और सौन्दर्य के प्रकाश मे जीवित रहो और देखो मै जिन्दा हूँ। दुनिया की कोई शक्ति मुझे अपने जीवन से दूर नही फेक सकती। यदि कोई मुझे अधा कर दे तो मैं प्रेम के गीत और सौन्दर्य की मधुर आवाजे सुनकर ही रहूँगा। यदि कोई मुझे बहरा करदे तो मैं प्रिय मित्रो की ठण्डी साँसो से मिली हुई हवा को छोडकर और सौन्दर्य की सुगन्ध सूँघकर खुशी के दिन काटूँगा। और यदि कोई हवा को भी मेरे पास आने से रोक दे तो मैं अपने मन के साथ ही मिलकर जीवन व्यतीत कर दूँगा। आखिर दिल प्रेम और सौन्दर्य ही की पैदावार है।

१२५

मैं इसलिये आया था कि मैं सबका रहूँ, सब के लिये रहूँ। आज मैं अकेले मे जो काम करूँ भविष्य लोगो के सामने उसका एलान करदे और जो कुछ मैं इस वक्त अपनी एक जबान से कहता हूँ—भविष्य उसे अनेक जबानो से प्रसिद्ध करे।

शरत् के नाटक	[शरत् चन्द्र चटर्जी]	५·५०
मीर साहब की ईद	[शौकत थानवी]	३·२५
राई का पहाड़	[देसराज]	०·३७

कहानी साहित्य

उडानें	[कृष्ण चन्द्र]	३·५०
एक खत एक खुशबू	[कृष्ण चन्द्र]	३ २५
सीमान्त	[रवीन्द्रनाथ टैगौर]	२·५०
चांद सितारे	[रवीन्द्रनाथ टैगौर]	२·५०
आँचल और आँसू	[शिक्षा रानी 'नीगम']	३·५०
पागल	[खलील जिब्रान]	१·५०
लायसैंस	[मण्टो]	३·५०
दो गज़ ज़मीन	[टॉलस्टाय]	२·५०
आँसू और मुस्कराहट	[खलील जिब्रान]	आगामी आकर्षण

स्पोर्ट्स

खेलें कैसे ?	[पी० एन० अग्रवाल]	५ २५
क्रिकेट	[पी० एन० अग्रवाल]	१·२५

शिल्प

माडर्न कशीदाकारी	[चित्रकार]	४·००

उपन्यास

माधवी	[गुलशन नन्दा]	४·५०
सूखे पेड सब्ज पत्ते	[गुलशन नन्दा]	४ ५०
पत्थर के होंठ	[गुलशन नन्दा]	३ ७५
एक नदी दो पाट	[गुलशन नन्दा]	४ २५
डरपोक	[गुलशन नन्दा]	४·००
बादल छँट गए	[कृष्ण चन्द्र]	३·००
ललितागी	[यादवचन्द्र जैन]	३·७५
आंचल मे दूध : आंखों में पानी	[यादवेन्द्र शर्मा "चन्द्र"]	५·००
मिट्टी का कलंक	[यादवेन्द्र शर्मा "चन्द्र"]	३·००
शान्ति, संघर्ष और प्रेरणा	[एस. पी. पांडेय]	५·००